अहिंसा, आगम और विज्ञान से आलोकित श्रेष्ठतम पत्रिका

भाव विज्ञान

BHAV VIGYAN

वर्धमान कॉलोनी, सागर (म.प्र.) में स्थित भ. पुष्पदन्त जिनालय में
आचार्य आर्जवसागरजी ससंघ प्रवचन देते हुए।

वीर निर्वाण संवत् - 2545
आषाढ़ कृष्ण, वि.सं. 2076, जून 2019
अंक : अड़तालीस
वर्ष : तेरह

आ.श्री आर्जवसागरजी के दीक्षादिवस पर गढ़ाकोटा में दीप प्रज्वलन करे हुए भक्तगण।

गढ़ाकोटा, सागर में आचार्यश्री आर्जवसागरजी के दीक्षा दिवस पर प्रवीण जैन दमोह आदि पादप्रक्षालन करते हुए।

मंगलगिरि, सागर पर दर्शनार्थ पधारे आचार्यश्री आर्जवसागरजी ससंघ।

गोपालगंज, सागर धर्मशाला में आ.श्री आर्जवसागरजी महाराज का आशीष लेते हुए मुनिश्री सुप्रभसागर एवं मुनिश्री प्रणत सागरजी महाराज।

आचार्यश्री आर्जवसागरजी के दर्शनार्थ पधारे आचार्यश्री विशुद्धसागरजी के शिष्य मुनि द्वय।

वर्द्धमान कॉलोनी, सागर में आ. आर्जवसागरजी के सान्निध्य में भाव विज्ञान पत्रिका विमोचन के समय दीप प्रज्वलन करते हुए विधायक शैलेन्द्र जैन, डॉ. अजित जैन आदि।

भावविज्ञान पत्रिका का विमोचन करते हुए जैन पंचायत सागर अध्यक्ष श्री महेश विलहरा, विधायक शैलेन्द्र जैन एवं डॉ. सुधीर जैन आदि।

रजिस्ट्रेशन क्रं. MPHIN/2007/27127

त्रैमासिक
भाव विज्ञान
(BHAV VIGYAN)

वर्ष-तेरह
अंक - अड़तालीस

आशीर्वाद व प्रेरणा
संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागरजी महाराज से दीक्षित
आचार्यश्री 108 आर्जवसागर जी महाराज।

• परामर्शदाता •
पंडित मूलचंद लुहाड़िया
किशनगढ़ (राजस्थान) मोबा.: 9352088800

। सम्पादक ।
डॉ. अजित कुमार जैन,
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स,
कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003
मो. : 7222963457, व्हाट्सएपः 9425601161
email : bhav.vigyan@gmail.com

• प्रबंध सम्पादक •
डॉ. सुधीर जैन, प्राध्यापक
85, डी.के. काटेज, ई-8 एक्सटेंशन, अरेरा कालोनी, भोपाल मो. 9425011357

• सम्पादक मंडल •
पं. जय कुमार 'निशांत', टीकमगढ़ (म.प्र.)
डॉ. संजय जैन (एडवोकेट), इंदौर (म.प्र.)
डॉ. श्रीमती अल्पना जैन (मोदी), ग्वालियर (म.प्र.)
इंजी. महेन्द्र कुमार जैन, भोपाल (म.प्र.)
श्री सुनील वेजीटेरियन, दमोह (म.प्र.)

• कविता संकलन •
पं. लालचंद जैन 'राकेश', भोपाल

• प्रकाशक •
श्रीमती सुषमा जैन धर्मपत्नी डॉ. अजित जैन
MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 मो.: 7024373841
email : bhav.vigyan@yahoo.co.in

• आजीवन सदस्यता शुल्क •

शिरोमणी संरक्षक	:	50,000 से अधिक
पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक	:	24,500
परम संरक्षक	:	21,000
पुण्यार्जक संरक्षक	:	18,000
सम्मानीय संरक्षक	:	11,000
संरक्षक	:	5,100
विशेष सदस्य	:	3,100
आजीवन (स्थायी)सदस्यता	:	1,500

कृपया सदस्यता शुल्क प्रकाशक के एवं रचनाएँ प्रबंध सम्पादक के पते पर भेजें।

पल्लव दर्शिका

विषय वस्तु एवं लेखक **पृष्ठ**

1. **आगम-अनुयोग [प्रश्नोत्तर-प्रदीप]** – आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज 2
2. **सम्यग्ज्ञान-भूषण व सिद्धान्त-भूषण पद हेतु त्रैमासिक धार्मिक प्रश्न-पत्र एवं नियमावली** 18
3. **पारसचन्द से बने आर्जवसागर** – आर्यिकारत्नश्री प्रतिभामति माताजी 20
4. **पौराणिक संस्कृति** – श्री नाथूलालजी जैन शास्त्री 23
5. **नियत और अनियत** – आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज 34
6. **समाचार** 39

लेखक एवं विचारों से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।
भाव विज्ञान से संबंधित समस्त निर्णयों/न्यायों के लिए न्याय क्षेत्र भोपाल ही मान्य होगा।

सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु भाव-विज्ञान धार्मिक परीक्षा बोर्ड, भोपाल द्वारा स्वीकृत

आचार्यश्री आर्जवसागर विरचित

आगम-अनुयोग

[प्रश्नोत्तर-प्रदीप]

प्र. 301 तीर्थंकर ऋषभदेव के मोक्ष प्राप्ति के पूर्व शारीरिक अवगाहना एवं मोक्ष प्राप्ति के उपरान्त आत्म प्रदेशों की अवगाहना (ऊँचाई) कितनी थी?

उत्तर तीर्थंकर ऋषभदेव के मोक्ष प्राप्ति के पूर्व शारीरिक अवगाहना पाँच सौ धनुष (चार हाथ का एक धनुष) एवं मोक्ष प्राप्ति के उपरान्त आत्म-प्रदेशों की अवगाहना अन्तिम शरीर से किञ्चित् न्यून थी।

प्र. 302 मोक्ष प्राप्ति के उपरान्त सिद्ध भगवान् के आत्म प्रदेशों की अवगाहना अन्तिम शरीर से किञ्चित् न्यून में क्या विशेषता है?

उत्तर मोक्ष प्राप्ति के उपरान्त अन्तिम शरीर से सिद्धों के आत्मप्रदेशों की अवगाहना किञ्चित् न्यून होना यह सर्वत्र आगम प्रमाणिक माना गया है, क्योंकि शरीर की अवगाहना को हीनाधिक करने वाले उस आयु कर्म का क्षय हो चुका है। परन्तु किञ्चित् न्यून का प्रमाण कितना होगा यह विचार करने योग्य है।

प्र. 303 मनुष्य के अन्तिम शरीर से मुक्त होने के उपरान्त उस अन्तिम शरीर से सिद्ध परमेष्ठी के आत्म-प्रदेशों की अवगाहना किञ्चित् न्यून जो सर्वत्र आगम वर्णित की गई है उस किञ्चित न्यून का सही कारण व प्रमाण क्या है?

उत्तर सम्पूर्ण दृश्यमान मनुष्य के शरीर की अवगाहना को लक्ष्य में रखकर किञ्चित् ऊन चरम शरीर प्रमाण सिद्धों के आत्म प्रदेशों की अवगाहना का जो कथन किया गया है उसके प्रसंग पर सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने पर ज्ञात होगा कि शरीर के भीतर मुख, उदर आदि में आत्म प्रदेशों से शून्य भाग भी है, उसको घटाने पर शरीर का घनफल एक तृतीय (1/3) भाग शून्य होगा अत: तिलोय पण्णत्ति ग्रन्थ के अनुसार यह सैद्धान्तिक कथन है कि अंतिम शरीर से एक तृतीयांश (1/3) भाग प्रमाण हीन सिद्धों की अवगाहना जानना चाहिए। (ति.प.)

प्र. 304 चक्रवर्ती महापुरुष किसे कहते हैं?

उत्तर पूर्व जन्म की तपस्या के पुण्य से स्वर्गिक सुखों का भोगकर मनुष्य लोक की कर्मभूमि में जन्म लेकर षट्खण्ड पृथ्वी के अधिपति रूप पुण्य पुरुष कहलाने वाले चक्ररत्न आदि चौदह रत्नों और कालनिधि आदि नव निधियों के जो स्वामी होते हैं उन्हें चक्रवर्ती कहते हैं।

प्र. 305 जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र सम्बन्धी वर्तमान अवसर्पिणी के दुषमासुषमा काल में उत्पन्न हुये बारह चक्रवर्तियों के नाम कौन-से हैं?

उत्तर बारह चक्रवर्तियों के नाम क्रमश: 1. भरत, 2. सगर, 3. मघव, 4. सनत्कुमार, 5. शान्तिनाथ, 6.

कुन्थुनाथ, 7. अरहनाथ, 8. सुभौम, 9 पद्मनाथ (महापद्म), 10. हरिषेण, 11. जयसेन, और 12. ब्रह्मदत्त इस प्रकार हैं।

प्र. 306 ऊपर वर्णित भरत आदिक बारह चक्रवर्तियों की जन्मभूमि कौन-सी थीं?

उत्तर भरत, सगर आदिक बारह चक्रवर्तियों की जन्मभूमियाँ क्रमशः- 1. अयोध्या, 2.अयोध्या, 3. श्रावस्ति (कौशलपुर), 4. हस्तिनागपुर, 5. हस्तिनागपुर, 6. हस्तिनागपुर, 7. हस्तिनागपुर, 8 अयोध्या, 9. हस्तिनागपुर, 10. कपिलनगर (भोगपुर), 11. कौशाम्बी, 12. कंपिलनगर इसप्रकार थीं।

प्र. 307 भरत, सगर आदिक बारह चक्रवर्तियों के जनक और जननी के शुभ नाम क्या थे?

उत्तर भरत, सगर आदिक बारह चक्रवर्तियों के जनक (पिता), जननी (माता) के क्रमशः शुभ नाम-1. ऋषभदेव-यशस्वति, 2. विजय-सुमंगला, 3. सुमित्र-भद्रवति, 4. विजय-सहदेवी, 5. विश्वसेन-ऐरादेवी, 6. सुरसेन-श्रीकान्ता, 7.सुदर्शन-मित्रसेना, 8. कीर्तिवीर्य-तारादेवी, 9.पद्मरथ-मयूरीप्रिया, 10. हरिकेतु-विप्रादेवी, 11.श्रीविजय-यशोवती और 12. ब्रह्मरथ-चूलादेवी जानना चाहिए।

प्र. 308 भरत, सगर आदिक बारह चक्रवर्तियों की उत्पत्ति के समय कौन-से तीर्थंकर का तीर्थकाल प्रवर्तमान था?

उत्तर भरत चक्रवर्ती प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव (वृषभनाथ) के तीर्थकाल में उन तीर्थंकर के ही समय उत्पन्न हुए थे। सगर चक्रवर्ती तीर्थंकर अजितनाथ के ही तीर्थकाल के समय उत्पन्न हुए थे। मघव चक्रवर्ती की उत्पत्ति के समय तीर्थंकर धर्मनाथ का तीर्थकाल प्रवर्तन था। सनत्कुमार चक्रवर्ती की उत्पत्ति के समय भी धर्मनाथ तीर्थंकर का तीर्थकाल प्रवर्तमान था। तीर्थंकर शांतिनाथ, तीर्थंकर कुन्थुनाथ और तीर्थंकर अरहनाथ स्वयमेव चक्रवर्ती थे। सुभौम चक्रवर्ती की उत्पत्ति के समय तीर्थंकर अरहनाथ के मोक्षोपरान्त उनका ही तीर्थकाल प्रवर्तमान था। पद्मनाथ (महापद्म) चक्रवर्ती की उत्पत्ति के समय तीर्थंकर मल्लिनाथ का तीर्थकाल प्रवर्तमान था। हरिषेण चक्रवर्ती की उत्पत्ति के समय तीर्थंकर मुनिसुव्रत का तीर्थकाल प्रवर्तमान था। जयसेन चक्रवर्ती की उत्पत्ति के समय तीर्थंकर नमिनाथ का तीर्थकाल प्रवर्तमान था और ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती की उत्पत्ति के समय तीर्थंकर नेमिनाथ का तीर्थकाल प्रवर्तमान था।

प्र. 309 चक्रवर्तियों के शरीर में पांचों इन्द्रियों से ग्रहण करने योग्य विषय सम्बन्धी बल कितना होता है?

उत्तर चक्रवर्ती अपनी स्पर्शनेन्द्रिय से 9 योजन तक का विषय, रसनेन्द्रिय से 9 योजन तक का विषय और घ्राणेन्द्रिय से भी 9 योजनों तक का विषय जान लेते हैं, चक्षुरिन्द्रिय से $47263\frac{7}{20}$ योजन तक देख सकते हैं और श्रोत्रेन्द्रिय से 12 योजन तक का शब्द सुन लेते हैं।

प्र. 310 चक्रवर्तियों के सप्तांग बल कौन-से होते हैं?

उत्तर चक्रवर्तियों के 1. स्वामी, 2 अमात्य, 3 देश, 4. दुर्ग, 5. खजाना, 6. षडंगबल और 7. मित्र इस तरह सात अंगबल होते हैं।

प्र. 311 चक्रवर्तियों का षडंगबल किस तरह का होता है?

उत्तर 1.चक्रबल, 2. चौरासी लाख भद्र हस्थी (गज), 3. चौरासी लाख रथ, 4. अठारह करोड़ जातिवंत (सुलक्षणयुत) घोड़े, 5. चौरासी करोड़ वीरभट (पैदल सैनिक-योद्धा), 6. असंख्यात विद्याधर सैन्य रूप चक्रवर्तियों का षडंगबल होता है।

प्र. 312 चक्रवर्तियों के दशांग भोग कौन-से होते हैं?

उत्तर चक्रवर्तियों के 1. दिव्यपुर (पट्टण), 2. दिव्य भाजन, 3. दिव्य-भोजन, 4. दिव्य शय्या, 5. दिव्य आसन, 6. दिव्य नाटक, 7. दिव्य रत्न, 8. दिव्य निधियाँ, 9. दिव्य सैन्य और 10. दिव्य वाहन इस तरह दशांग भोग होते हैं।

प्र. 313 चक्रवर्ती के भोग रूप दिव्य-रत्न कौन-से होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के दिव्य-रत्न चौदह होते हैं। जिनके नाम हैं- 1. सेनापतिरत्न, 2. गृहपतिरत्न(भद्रमुख-हर्म्यपति), 3. पुरोहित रत्न (बुद्धिसमुद्र), 4. तक्षरत्न (कामवृष्टि-स्थपति), 5. स्त्रीरत्न, 6. गजपतिरत्न (विजयगिरि), 7. अश्वरत्न (पवनंजय), 8. चक्ररत्न (सुदर्शनचक्र), 9. छत्ररत्न (सूर्यप्रभ), 10. खड्गरत्न (भद्र-मुख असि), 11. दण्डरत्न (प्रवृद्धवंग), 12. काकिणी रत्न, 13. चूड़ामणि रत्न (चिंतामणि), 14. धर्मरत्न (चर्मरत्न)।

प्र. 314 चक्रवर्ती के सेनापतिरत्न का क्या महत्व है?

उत्तर एक आर्यखण्ड और पाँच म्लेच्छखण्डों रूप षट्खण्डों तथा अन्य दिग्विष्टरों की विजय प्राप्ति में सहायक सेना नायक रूप सेनापतिरत्न है।

प्र. 315 चक्रवर्ती के गृहपतिरत्न का क्या महत्त्व है?

उत्तर राजमहल का हिसाब-किताब (लेखा-जोखा) आदि रूप व्यवहार चलाने वाला भण्डारी गृहपतिरत्न होता है।

प्र. 316 चक्रवर्ती के पुरोहितरत्न का क्या महत्त्व है?

उत्तर धर्मप्रेरक बुद्धि द्वारा सर्वजनों को धर्म, कर्मानुष्ठान पूर्वक सलाह व प्रेरणा बुद्धि का समुद्र पुरोहितरत्न होता है।

प्र. 317 चक्रवर्ती के तक्षरत्न से क्या प्रयोजन है?

उत्तर राजमहल, मंदिर, प्रासाद, पुल और तम्बू आदिक को उत्तम रीति से तैयार करने-करवाने वाला उत्तम कारीगर रूप तक्षरत्न है।

प्र. 318 चक्रवर्ती के स्त्रीरत्न का क्या महत्त्व है?

उत्तर चक्रवर्ती की छ्यानवे हजार युवती-बल्लभाओं में जो अत्यन्त प्रिय प्रमुख बल्लभा होती वह पट्टरानी रूप स्त्रीरत्न है।

प्र. 319 चक्रवर्ती के गजपतिरत्न से क्या इष्ट सिद्ध होता है?

उत्तर रथ सवारी के प्रयोजन हेतु एवं अरिनृपों के गजघटाओं का विघटन करने वाला गजपति रत्न विजय

सिद्धि का कारण है।

प्र. 320 चक्रवर्ती के अश्व रत्न से क्या प्रयोजन सिद्ध होता है?

उत्तर तिमिश्र गुफा के कपाट- विघटन होते ही बारह योजन के क्षेत्र को एक छलांग में लांघने और दौड़ने की सामर्थ्य रखने वाला अश्वरत्न होता है। जिसके माध्यम से चक्रवर्ती अपनी विशाल सेना को लेकर विजयार्ध पर्वत के आगे जाकर भी वहाँ पर स्थित म्लेच्छ खण्डों पर विजय प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करता है।

प्र.321 चक्रवर्ती के चक्ररत्न का क्या सदुपयोग होता है?

उत्तर अन्याय व अनीति-कारक जनों का संहारक चक्ररत्न आयुध सेना के अग्रिम गतिमान चहुँओर प्रकाश फैलाने वाला और चक्रवर्ती की छहों खण्डों पर विजय पताका फैलाने वाला प्रमुख चक्र रत्न होता है।

प्र. 322 चक्रवर्ती का छत्ररत्न किस तरह सुशोभित होता है?

उत्तर कटक (सेना)के ऊपर आने वाली वर्षादिक बाधाओं को दूर करने वाला रत्न छत्ररत्न कहलाता है जो सर्व जनानन्दमय सुशोभित होता है।

प्र. 323 चक्रवर्ती का खड्गरत्न क्या प्रयोजन रखने वाला है?

उत्तर चक्रवर्तियों के चित्तोत्सव को करने वाला अन्यायी जनों के संहारक खड्गरत्न होता है।

प्र. 324 चक्रवर्ती का दण्डरत्न का क्या विशिष्ट कार्य होता है?

उत्तर चक्रवर्ती का दण्डरत्न मार्ग को स्वच्छ व निरापद करने वाला, गुफाओं के कपाट खोलने वाला, वृषभांचल पर्वत पर प्रशस्ति लिखने के काम आने वाला, शत्रुओं को दण्डित करने वाला तथा एक हजार योजन प्रमाण तक की भूमि को चीर देने में समर्थ ऐसे विशिष्ट कार्य का संपादक दण्डरत्न होता है।

प्र. 325 चक्रवर्ती के काकिणीरत्न की क्या महिमा है?

उत्तर काकिणी अस्त्र गुफाओं के घोर अंधकार में प्रकाश फैलाने वाला गुफाओं या अंधकार मय प्रदेशों की दीवार पर जिस रत्न से सूर्य-चन्द्र मण्डल का आकार लिखते ही अतिशयवान प्रकाश हो जावे ऐसा रत्न व प्रशस्ति लिखने का भी कार्य करने वाला रत्न काकिणीरत्न विशिष्ट महिमा कारक होता है।

प्र. 326 चक्रवर्ती के चूड़ामणि रत्न की क्या विशेषता है?

उत्तर इच्छित पदार्थों को देने में समर्थ तथा बाह्य वस्तुओं को प्रकाशित करने वाला रत्न विशेष चूड़ामणि रत्न कहलाता है।

प्र. 327 चक्रवर्ती का धर्मरत्न या चर्मरत्न किसे कहा जाता है?

उत्तर समुद्र में या भूमि जल मग्न हो जाने पर नीचे भूमि-सम सहारा बन छत्ररत्न से मिलकर अण्डाकार बनकर सम्पूर्ण कटक (सेना) की रक्षा करने वाला, संसार समुद्र से पार लगाने वाले धर्मसम बड़े-बड़े नद व नदियों तथा समुद्र से पार लगाने वाला धर्म या चर्मरत्न कहलाता है।

प्र. 328 चक्रवर्ती के इन चौदह रत्नों में से किन्हीं रत्नों में अन्य विशेष कार्य व प्रमाणादि सम्बंधी क्या

विशेषता है?

उत्तर
- चक्रवर्ती के सेनापति आदिक सात रत्न चेतन (सजीव) तथा चक्ररत्न आदिक सात रत्न अजीव होते हैं।
- पुरोहित रत्न धर्म-कर्म रूप अनुष्ठानों के साथ-साथ रण संग्राम में सैनिकों के रोग व घाव-व्रणादिक के सुयोग्य उपचार का कार्य भी किया करता है।
- पट्टरानी रूपी स्त्रीरत्न के साथ क्रीड़ा के समय चक्रवर्ती स्वाश्रित अन्य रानियों के साथ भी क्रीड़ा करने के काल में अधिकाधिक छ्यानवे हजार भी रूप धारण कर लेता है जिसे अवलोकन कर पट्ट (मुख्य) रानी रूपी स्त्रीरत्न को अत्यन्त सन्तुष्टि का अनुभव होता है।
- छत्र रत्न का प्रमाण एक धनुष प्रमाण होते हुए भी चक्रवर्ती के स्पर्श किये जाने पर वह छत्ररत्न आवश्यकतानुसार बारह योजन तक विस्तृत हो जाया करता है।
- काकिणी रत्न का प्रमाण चार अंगुल प्रमाण वाला होता है तथा इस रत्न के माध्यम से गुहादिक अंधकार वाले स्थलों पर एक-एक योजन के अन्तराल से सूर्य-चन्द्र-सम प्रकाश की उपलब्धि सहज होती है।
- चूड़ामणि रत्न चार अंगुल लम्बा और दो अंगुल चौड़ा प्रमाण वाला होते हुए रोग-शोक नाशक तथा बारह योजन तक प्रकाश को विस्तृत करने वाला भी वर्णित किया गया है।
- धर्मरत्न (चर्मरत्न) दो हाथ प्रमाण होता है परन्तु प्रसंगवश चक्रवर्ती का हाथ लगते ही उसका विस्तार बारह योजन-प्रमाण हो जाता है, और विशेष इतना ही नहीं बल्कि आवश्यकतानुसार विस्तृत किये गये धर्मरत्न पर प्रात: बोया हुये धान्य, अनाज व फलादि सायंकाल तक सपक्व हो भोज्य योग्य हो जाया करते हैं।

प्र. 329 चक्रवर्ती के इन चौदह रत्नों की रक्षा-सुरक्षा करने हेतु कोई देवादिक सुनिश्चित होते हैं क्या?

उत्तर हाँ; चक्रवर्ती के सेनापति आदिक चौदह रत्नों में से प्रत्येक रत्न की रक्षा-सुरक्षा एक-एक हजार यक्ष देव किया करते हैं जिनकी नियोगनी यक्षणी भी इस कार्य में सहयोगी होती हैं।

प्र. 330 हजारों यक्ष देव देवियों से सुरक्षित सुभौम और ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती सप्तम् पृथ्वी के सबसे घोर नरक में जाकर घोर दु:खों का फल भोगने लगे उन्हें नरक में जाने से वे यक्ष देव-देवी क्यों नहीं बचा सके?

उत्तर संसारी जीवों के पुण्य और पाप के फल को बदलने या टालने में कोई भी सरागी देवी-देवता समर्थ नहीं होते। स्वयंकृत कर्म का फल संसारियों को भोगना ही पड़ता है। वीतरागी पञ्चपरमेष्ठी की भक्ति से अर्जित पुण्य; पाप को भी टालने या बदलने कारण बन सकता है बस इतना ही कहना शेष होगा कि सामने वाला भव्य सम्यग्दृष्टि और तीव्र धर्म पुरुषार्थी होना चाहिए। न कि किसी यक्ष देव-देवी के भरोसे रहना चाहिए।

प्र. 331 चक्रवर्ती के चौदह रत्न कहाँ- किस जगह उत्पन्न होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के चौदह रत्नों में से सेनापति, गृहपति, पुरोहित और स्त्रीरत्न स्व-स्व नगरों में उत्पन्न होते हैं। गजपति और अश्व रत्न विजयार्ध पर्वत पर उत्पन्न होते हैं। चक्र, छत्र, खड्ग और दण्ड रत्न आयुधशाला में उत्पन्न होते हैं तथा काकिणी, चूड़ामणि और धर्म (चर्म) रत्न श्रीगृह में उत्पन्न होते हैं।

प्र. 332 चक्रवर्ती के दशांग भोगों के अन्तर्गत नव निधियाँ कौन-सी होती हैं?

उत्तर चक्रवर्ती की दिव्य नव-निधियाँ- 1. कालनिधि, 2. महा कालनिधि, 3. माणक निधि, 4. पिंगल निधि, 5. नैसर्पनिधि, 6. पद्मनिधि, 7. पाँडुक निधि, 8.शंखनिधि और 9. सर्वरत्ननिधि।

प्र. 333 चक्रवर्ती की काल नामक निधि कौन-कौन-से पदार्थों को देने वाली सर्वोत्तम निधि कहलाती है?

उत्तर सर्वप्रथम यह कालनिधि सर्वऋतुओं अनुरूप द्रव्य फल-फूलादिक फलती है तथा इस निधि के माध्यम से ज्योतिषशास्त्र, निमित्तशास्त्र, न्याय शास्त्र, व्याकरण शास्त्र, छंदालंकार शास्त्र, लोक व्यवहार शास्त्र और पुराण आदिक का सद्भाव अर्थात् प्राप्ति होती है।

प्र. 334 चक्रवर्ती की महाकाल नामक निधि में किन-किन वस्तुओं का सद्भाव पाया जाता है?

उत्तर चक्रवर्ती की महाकाल निधि से षट्कर्मों के योग्य साधन तथा भोजन और भाजन (बर्तन) एवं अनेक धातुएँ प्राप्त होती हैं।

प्र. 335 चक्रवर्ती की माणक नामक निधि राज्य में कौन-सी वस्तुएँ उपलब्ध कराती है?

उत्तर चक्रवर्ती की माणक निधि कवच, ढाल, तलवार, बाण, शक्ति, धनुष तथा चक्र आदिक नाना प्रकार के दिव्य शस्त्रों व आयुधों के साथ नीति शास्त्रों को भी प्रदान करती है।

प्र. 336 चक्रवर्ती की पिंगल नामक निधि कौन-सी वस्तुओं से परिपूर्ण करती है?

उत्तर चक्रवर्ती की पिंगल निधि कटक, कटिसूत्र, कुण्डल और केयूर इत्यादिक अनेक दिव्य आभूषणों से पुण्यवानों को परिपूर्ण करती है।

प्र. 337 चक्रवर्ती की नैसर्प-निधि से क्या-क्या सुख रूप साधन उपलब्ध होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती की नैसर्प नामक निधि से आसन, शय्या, प्रासाद व मंदिरों की सहज रूप से उपलब्धि हो जाया करती है।

प्र. 338 चक्रवर्ती की पद्मनामक निधि कौन-से वस्त्र प्रदान करती है?

उत्तर चक्रवर्ती की पद्मनिधि पादाम्बर, चीन, महानेत्र, दुकूल, उत्तम कम्बल तथा नाना प्रकार के वर्णादिक से परिपूर्ण वस्त्रों को प्रदान करती है।

प्र. 339 चक्रवर्ती की पाण्डुक नामक निधि कौन-से पदार्थों को फलती है?

उत्तर चक्रवर्ती की पाण्डुक-निधि शालि, ब्रीहि, जौ आदिक समस्त धान्य तथा मनोहर षट् रसादिक से परिपूर्ण करती है।

प्र. 340 चक्रवर्ती की शंख नामक निधि कौन-सी वस्तुएँ अर्पित कर भव्यों की श्रवणेन्द्रिय के लिए

संतृप्त करती है?

उत्तर चक्रवर्ती की शंख नामक निधि भेरी, शंख, नगाड़े, वीणा, झल्लरी, मृदंग और नाना तरह के वाद्यों को अर्पित कर भव्यजनों की श्रवणेन्द्रिय को प्रफुल्लित करने वाली होती है।

प्र. 341 चक्रवर्ती की सर्वरत्न नामक निधि पुण्यवानों के लिए कौन-कौन-से उत्तमोत्तम रत्नों को फलती है?

उत्तर चक्रवर्ती की सर्व रत्न निधि इन्द्रनीलमणि, महानीलमणि, वज्रमणि (सूर्यकान्तमणि और चंद्रकान्त मणि) आदिक बड़ी-बड़ी ज्योति शिखा के धारक उत्तमोत्तम रत्नों को कल्पतरुसम फलती है।

प्र. 342 चक्रवर्ती की नवनिधियाँ कहाँ उत्पन्न (प्राप्त) होती हैं?

उत्तर चक्रवर्ती की महापुण्य-प्रभाव से भोगोपभोग को देने वाली ये अक्षय नवनिधियाँ श्रीपुर में उत्पन्न (प्रकट) होती हैं, और दूसरे मत से ये नवनिधियाँ नदीमुख से उत्पन्न होती हैं।

प्र. 343 चक्रवर्ती की नवनिधियों की रक्षा कौन करते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती की नवनिधियों की रक्षा हमेशा निधिपालक नामक देव किया करते हैं और दूसरे मत से प्रत्येक निधि की रक्षा में एक-एक हजार यक्ष नियुक्त होते हैं।

प्र. 344 चक्रवर्ती की नवनिधियाँ किस रत्न के आधीन रहती हैं?

उत्तर सर्व मनोरथों की पूर्ण करने वाली ये नवनिधियाँ गृहपति रत्न के आधीन होती हैं।

प्र. 345 चक्रवर्ती की नवनिधियों का आकार व प्रमाणादिक किस तरह का होता है?

उत्तर चक्रवर्ती की नव निधियाँ गाड़ी के सदृश आकार वाली चार-चार भौरों (चक्रों), आठ-आठ पट्टियों से सहित नौ योजन चौड़ी, बारह योजन लम्बी, आठ योजन गहरी और वक्षार गिरि के समान विशाल कुक्षी से रहित होती हैं।

प्र.346 चक्रवर्ती व राजाओं के चार कर्त्तव्य कौन-से होते हैं?

उत्तर चक्रवतियों के चार कर्त्तव्य इस तरह होते हैं-

1. आत्मपालन- निजात्म रक्षा की व्यवस्था करना।

2. मतिपालन- अपनी बुद्धि व विवेक को जाग्रत रखना।

3. कुलपालन- राजकुलाचार पर ध्यान रखना। और

4. प्रजापालन- पुत्रवत् प्रजा का पालन करना।

प्र.347 चक्रवर्तियों की चार तरह की राज विद्याएँ कौन-सी हैं?

उत्तर चक्रवर्तियों की चार तरह की राजविद्याएँ इस तरह होती हैं-

1. आन्वीक्षिकी- अपना स्वरूप जानना, निजबल की पहचान करना, हेयोपादेय का ज्ञान होना, सत्यासत्य की समझ होना और रत्न परीक्षक की तरह सूक्ष्म दृष्टि का होना।

2.**त्रयी**- शास्त्रानुसार धर्म-अधर्म का मर्म समझकर अधर्म छोड़कर धर्म में प्रवृत्ति करना।

3. वार्ता- अर्थ-अनर्थ को समझकर प्रजाजनों का रक्षण करना।

4. **दण्डनीति**- योग्य दण्ड-विधान द्वारा दुष्ट-जनों को मार्ग पर लाना

प्र. 348 चक्रवर्ती व राजाओं के छह विशेष गुण कौन-से होते हैं?

उत्तर राजाओं के छह गुण इस तरह होते हैं-

1. **संधि**- अन्य राजाओं से प्रेम-वात्सल्य व्यवहार बनाकर रखना।

2. **निग्रह**- अन्याय रोकने के लिए युद्ध करना।

3. **यान**- विविध प्रकार के वाहनों व साधनों का ज्ञान।

4. **आसन**- राज्य व्यवस्थानुसार स्थान का अनुभव।

5. **संस्थान**- वचन का दृढ़ संकल्प।

6. **आश्रय**- अपने से बलिष्ठ का सहयोग लेना और अपने से कमजोर को सहारा देना।

प्र.349 मुकुटबद्ध राजा कितनी श्रेणियों का स्वामी होता है?

उत्तर मुकुटबद्धराजा अठारह श्रेणियों का स्वामी होता है, जो श्रेणियाँ इस तरह हैं-

1. **सेनापति**- समस्त सेनाओं का नायक, 2. **गणकपति**- ज्योतिषी आदिकों का नायक, 3. **वणिक्पति**- व्यापारियों का नायक, 4. **मंत्री**- पंचांग, मंत्र-विषय में प्रवीण, 5. **दण्डपति**-सेना नायक, 6. **महत्तर**- कुलवान अर्थात् कुलविशेष में उच्चता, 7. **तलवर**-कोतवाल का स्वामी (नगरकोतवाल) 8. **ब्राह्मण**-वर्ण प्रमुख (स्वामी), 9. **क्षत्रिय (क्षत्री)**-शरणागतों का रक्षक, 10. **वैश्य**- व्यापारी, 11. **शूद्र**- सेवा कार्य-कारक, 12. **हस्थी**-विजयश्री दात्ता, 13. **अश्व**- सैनिक सवारी, 14. **रथ**- आवागमन कारक, 15. **पदाति**-चतुरंग सेना-बलस्वामी, 16. **पुरोहित**-राज-पण्डित, 17. **आमात्य**-देश का अधिकारी और 18. **महामात्य**-समस्त राज्यकार्यों का अधिकारी।

प्र.350 मुकुटबद्ध राजाओं में विशिष्ट पदस्थान कौन-से होते हैं?

उत्तर 500 मुकुटबद्ध राजाओं का स्वामी अधिराजा होता है। 1000 मुकुटबद्ध राजाओं का स्वामी महाराजा होता है। 2000 मुकुटबद्ध राजाओं का स्वामी अर्धमाण्डलीक होता है। 4000 मुकुटबद्ध राजाओं का स्वामी माण्डलीक होता है। 8000 मुकुटबद्ध राजाओं का स्वामी महामाण्डलीक होता है। 16000 मुकुटबद्ध राजाओं का स्वामी अर्धचक्री (त्रिखण्डाधिपति) होता है और 32000 मुकुटबद्ध राजाओं का स्वामी सकल चक्रवर्ती (षट्खण्डाधिपति) होता है।

प्र.351 चक्रवर्ती का स्त्री परिवार कितना और किस जगह का होता है?

उत्तर चक्रवर्ती की स्त्री परिवार एक पट्टरानी से अतिरिक्त 96 हजार स्त्री रूप होता है। इनमें आर्य खण्ड से 32 हजार राजकन्यायें, विजयार्धश्रेणी से सम्बन्धित 32 हजार विद्याधर राज-कन्यायें और पंचम्लेच्छ खण्डों से 32 हजार राजकन्यायें प्राप्त होती हैं।

प्र.352 चक्रवर्ती की पट्टरानी से वंशोत्पत्ति (संतानोत्पत्ती) क्यों नहीं होती?

उत्तर चक्रवर्ती की पट्टरानी शंखावर्त योनियुत होने के कारण वह गर्भ-धारण की अयोग्य स्थिति में बंध्या ही रहती है और वंशोत्पत्ति से वंचित रहती है।

प्र.353 चक्रवर्ती की पट्टरानी से अतिरिक्त अन्य रानियों से कितनी संतानें (पुत्र-पुत्रियाँ) उत्पन्न होती हैं?

उत्तर चक्रवर्ती की संख्यात हजार संतानें उत्पन्न होती हैं।

प्र.354 चक्रवर्ती का बन्धुवर्ग कितना विशाल होता है?

उत्तर चक्रवर्ती का बन्धुवर्ग 50 हजार संख्या में बड़ा विशाल होता है।

प्र.355 चक्रवर्ती के सम्पूर्ण वैद्य कितनी संख्या में होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के शारीरिक वैद्य 361 एवं इतर वैद्य 361 होते हैं।

प्र.356 चक्रवर्ती के रसोइयों की संख्या कितनी होती है?

उत्तर चक्रवर्ती के रसोइयों की संख्या 360 होती है।

प्र.357 चक्रवर्ती के अंग रक्षकों की संख्या कितनी होती है?

उत्तर चक्रवर्ती के अंगरक्षकों की संख्या 360 होती है।

प्र.358 चक्रवर्ती के परिचारक (सेवक) गणबद्धदेव कितने होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के परिचारक (सेवक) गणबद्धदेव 32 हजार होते हैं।

प्र.359 चक्रवर्ती की नाट्यशालाओं की संख्या कितनी होती है?

उत्तर चक्रवर्ती की नाट्यशालाओं की संख्या 32 हजार होती है।

प्र.360 चक्रवर्ती की संगीत शालाओं की संख्या कितनी होती है?

उत्तर चक्रवर्ती की संगीत शालाओं की संख्या 32 हजार होती है।

प्र.361 चक्रवर्ती के अधीनस्थ कितने देश होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के अधीनस्थ 32 हजार देश होते हैं।

प्र.362 चक्रवर्ती के राज्य में कृषि-उपयोगी कितने हल होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के राज्य में कृषि उपयोगी एक करोड़ हल होते हैं।

प्र.363 चक्रवर्ती के राज्य में कितने गौ मण्डल (गौशालाएँ) होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के राज्य में तीन करोड़ गौ मण्डल होते हैं।

प्र.364 चक्रवर्ती के गृह (राजभवन) में रसोई-पाक हेतु कितने स्वर्ण के बड़े हण्डे (बर्तन) होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के राजगृह में एक करोड़ स्वर्ण के हण्डे होते हैं।

प्र.365 चक्रवर्ती के अधीनस्थ कितने ग्राम होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के अधीनस्थ दीवार से घिरे 96 करोड़ ग्राम होते हैं।

प्र.366 चक्रवर्ती के अधीनस्थ कितने नगर होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के अधीनस्थ परकोटे और चार द्वारों से युक्त 75 हजार नगर होते हैं।

प्र.367 चक्रवर्ती के राज्य में कितने खेट होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के राज्य में नदी व पर्वतों से वेष्ठित गाँव रूप 76 करोड़ खेट होते हैं।

प्र.368 चक्रवर्ती के राज्य में कितने खर्वड होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के राज्य में पर्वतों से घिरे हुए गाँव रूप 24 हजार खर्वड होते हैं।

प्र.369 चक्रवर्ती के राज्य में कितने मडम्ब होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के राज्य में पाँच सौ ग्रामों से संयुक्त रूप चार हजार मडम्ब होते हैं।

प्र.370 चक्रवर्ती के राज्य में कितने पट्टण होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के राज्य में रत्न उत्पत्ति के स्थान रूप पट्टण 48 हजार होते हैं।

प्र.371 चक्रवर्ती के राज्य में होने वाले संवाहन किसे कहते हैं और वे कितने होते हैं?

उत्तर चक्रवर्ती के राज्य में उपसमुद्र के तट पर रहने वाले गाँवों को संवाहन कहते हैं और वे 74 हजार होते हैं।

प्र.372 चक्रवर्ती के राज्य में होने वाली दुर्गाटवी किसे कहा जाता है और कितनी संख्या में हुआ करती हैं?

उत्तर चक्रवती के राज्य में पर्वतों पर रहने वाले व वन से घिरे गावों को दुर्गाटवी कहा जाता है और उनकी संख्या 28 हजार होती हैं।

प्र.373 चक्रवर्ती के राजगृह में शंख, भेरी और पटह कितनी संख्या में होते हैं और उनकी ध्वनि सुनाई देने की दूरी का प्रमाण कितना है?

उत्तर चक्रवर्ती के राजगृह में शंख, भेरी (नगाड़ा) और पटह (वाद्यविशेष) की संख्या 24-24 होती है और इनकी ध्वनि 12 योजन तक सुनाई देती है।

प्र.374 भरत चक्रवर्ती के कौन-से पुत्र ने मिथ्या मान्यता से भव-भव में भ्रमण कर, पापों का भार हल्का होने पर अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर-वर्द्धमान तीर्थंकर बन भव-भ्रमण से मुक्ति पायी थी?

उत्तर भरत चक्रवर्ती के पुत्र मारीचि कुमार ने मिथ्या मान्यता (वेश) प्रचलित कर भव-भव में भ्रमण कर, पापों का भार हल्का होने पर अन्तिम तीर्थंकर भगवान् महावीर वर्द्धमान तीर्थंकर बन भव-भ्रमण से मुक्ति पायी थी।

प्र.375 भरत चक्रवर्ती के कौन-से और कितने पुत्र नित्य निगोद से आये थे?

उत्तर भरत चक्रवर्ती के भद्र, विवर्धन आदि शुभ नाम वाले 923 पुत्र नित्य-निगोद से आये थे।

प्र.376 भद्र, विवर्धन आदि 923 पुत्र किस तरह से नित्य-निगोद से निकल कर मनुष्य पर्याय को प्राप्त हुए?

उत्तर जिस भाड़ में भूजे जाने वाले कोई-कोई चने भूजे जाते समय उचटकर भाड़ से बाहर निकल जाते हैं वैसे ही अनादि काल से कर्मों के सताये व दु:खों को भोगते हुए, कर्मों का भार हल्का होने वे भद्र, विवर्धन आदि 923 पुत्र नित्यनिगोद से बाहर आकर मनुष्य पर्याय को प्राप्त हुए थे।

प्र.377 भद्र, विवर्धन आदि 923 पुत्रों द्वारा अपने माता-पिता आदिक से मौन धारण करने का कारण क्या था?

उत्तर भद्र, विवर्धन आदि 923 पुत्रों द्वारा अपने माता-पिता आदिक से मौन धारण करने का मुख्य कारण बड़ा ही रहस्यमय था कि वे पुत्र अनादिकाल से नित्य निगोद में एक श्वास में अठारह बार जन्म-मरण से होने वाले भयानक दु:खों को सहते-सहते जातिस्मरण कर संसार से भयभीत होकर जगत् के मोह-जाल से उदासीन हो गये थे और माता-पितादिक से वार्तालाप करने से उन्हें मोह जागृत होगा और हमें संसार के व्यवहार में फँसना पड़ेगा अत: वे मौन-धारण कर धर्म-भावना के चिन्तवन में लीन बने रहते थे।

प्र.378 भरत चक्रवर्ती ने भद्र, विवर्धन आदिक 923 पुत्रों पर किस तरह का संदेह मन में धारण करते हुए तीर्थंकर ऋषभदेव जिनवर के समवसरण में किस-तरह का प्रश्न निवेदित किया था?

उत्तर भरत चक्रवर्ती ने भद्र, विवर्धन आदिक 923 पुत्रों के मौन धारण पर गूँगेपन का संदेह धारणकर समवसरण में यह प्रश्न किया था कि हे प्रभु, प्रथम तीर्थंकर के कुल में उत्पन्न हुए ये पुत्र गूँगे क्यों हैं?

प्र.379 भरत चक्रवर्ती द्वारा पुत्रों के गूँगेपन से सम्बन्धित पूछे जाने पर उसे भगवान् की वाणी द्वारा क्या समीचीन उत्तर प्राप्त हुआ था?

उत्तर भगवान् ने 923 पुत्रों के सम्बन्ध में कहा कि ये पुत्र गूँगे नहीं हैं बल्कि ये असार रूप इस संसार व जगत् से उदासीन हैं और यहाँ अब ये मोक्षमार्ग पाने अवश्य बोलेंगे।

प्र.380 भरत चक्रवर्ती के ऐसे निकट भव्य 923 पुत्रों ने आत्मकल्याण रूप मोक्ष-पुरुषार्थ को किस तरह सफल बनाया था?

उत्तर भरत चक्रवर्ती के निकट भव्य पुत्रों ने आत्म कल्याण रूप मोक्ष-पुरुषार्थ हेतु समवसरण में प्रभु से नम्र निवेदन के साथ मौन खोलते हुए अपनी आंतरिक भावना प्रकट करते हुए कहा कि हे प्रभु! हम अनादि-काल से निगोद के दु:ख सहते-सहते संसार के दु:खों से अत्यन्त भयभीत होकर आपकी शरण में आये हैं, हम आप जैसे अनन्त सुखी होकर संसार से मुक्ति की तीव्र अभिलाषा रखते हैं अत: हमें मोक्षमार्ग से उपकृत कीजिये जिस साधन से हम सम्पूर्ण दुष्ट कर्मों का क्षय कर मोक्ष-धाम को प्राप्त कर सकें; और उन सभी पुत्रों ने अपने पिता आदिक परिजनों को अचरज में डालते हुए सर्व वस्त्राभूषणों का त्याग कर, केशलोंच कर, निर्ग्रन्थ-मुनि दीक्षा को धारण कर लिया था।

प्र.381 भद्र, विवर्धन आदिक 923 पुत्रों ने निर्ग्रन्थ-मुनि बन तपस्या के माध्यम से क्या फल प्राप्त किया था?

उत्तर भद्र, विवर्धन आदिक 923 मुनियों ने अपने उत्कृष्ट वैराग्य घोर तपस्या व ध्यान के माध्यम से अल्प काल में ही सम्पूर्ण कर्मों की निर्जरा कर मोक्ष प्राप्ति-द्वारा सिद्धालय रूप अष्टम वसुधा में अनन्त ज्ञान, दर्शन सुखादिक गुणों के भण्डार रूप आत्मिक वैभव को पाकर अनन्तकाल पर्यन्त के लिए स्थायित्व अवस्था को प्राप्त किया था?

प्र.382 भरत चक्रवर्ती के लिए वैराग्य किस तरह हुआ उनके वैराग्य का कारण क्या था?

उत्तर भरत चक्रवर्ती ने समवसरण में वृषभनाथ भगवान् का यह उपदेश सुना कि ''अरे भव्य जीवो! तुम

विकारी भावों को शीघ्र छोड़ो और हमारे समान अपने जैसे ज्ञान, दर्शन, सुख और शक्ति के स्वामी बन स्वात्मा में राज्य करो'' तब भगवान् का यह संदेश भरतेश्वर के अत्यन्त विरक्त मन में प्रवेश कर गया और एक दिवस दर्पण में मुख देखते समय भरत चक्रेश्वर की दृष्टि अपने एक श्वेत केश पर पड़ी; उसे देखते ही बस; भरतेश्वर को ऐसा लगा कि मानों मुक्तिपुरी से भगवान् के द्वारा प्रेषित विशिष्ट-संदेश-वाहक दूत ही आ गया हो और वे संसार, शरीर और भोग से निर्विण्ण (वैरागी) हो गये।

प्र.383 भरतेश्वर ने वैरागी बनकर क्या कार्य सम्पन्न किया था?

उत्तर भरतेश्वर का आध्यात्मिक जीवन मोक्ष इच्छुक जनों के लिए चमत्कार का जनक रहा है उन्होंने छह खण्ड प्रमाण पौद्गलिक साम्राज्य का त्याग करके मुनि पद धारण करते समय केशों का लोच किया और तत्काल ही, नग्न दिगम्बर मुद्रा के साथ शुक्ल ध्यान के माध्यम से शत्रुध्वंस कलाँ में पारंगत वे सुयोगी भरत अंतर्मुर्हूर्त्त में ही मोहासुर का विनाश करके सर्वज्ञता रूप केवलज्ञान साम्राज्य के स्वामी हो गए। ऐसे मंगल क्षण में देवों ने गंधकुटी की रचना कर बत्तीस इन्द्रों ने भगवान् भरत की दिव्य पूजा सम्पन्न की।

प्र.384 केवलज्ञानी-सर्वज्ञ श्री भरत भगवान् से किस तरह से जन कल्याण सम्पन्न हुआ था।

उत्तर दीक्षा लेते ही अल्पकाल में ही सर्वज्ञता व कैवल्यता प्राप्त कर तीर्थंकर की अपेक्षा अद्भुत् विशेषता प्रदर्शित करने वाले भगवान् भरत ने भगवान् ऋषभनाथ के समान भरत क्षेत्र की आर्यखण्डकी धरा पर समस्त देशों में विहार कर जीवों के निज-आत्मकल्याण हेतु अपनी दिव्य वाणी के द्वारा उनका आत्मोद्धार किया था।

प्र.385 भगवान् भरत के लिए निर्वाण-मोक्ष की प्राप्ति कहाँ से हुई थी?

उत्तर भगवान् भरत के लिए निर्वाण की प्राप्ति कैलाश पर्वत से हुई थी।

प्र.386 भरत चक्रवर्ती के अलावा अन्य चक्रवर्तियों के लिए कौन-सी गति की प्राप्ति हुई थी?

उत्तर मोक्ष-पद को प्राप्त भरत चक्रवर्ती के अलावा सगर चक्रवर्ती भी मोक्ष-पद को प्राप्त हुए। मघव चक्रवर्ती ने सौधर्म स्वर्ग को पाया, सनत्कुमार चक्रवर्ती ने सानत्कुमार स्वर्ग को ही पाया। शान्तिनाथ, कुन्थुनाथ और अरहनाथ चक्रवर्ती ने मोक्ष-पद को पाया। सुभौम चक्रवर्ती ने महातम: पृथ्वी को पाया। पद्मनाथ (महापद्म), हरिषेण और जयसेन चक्रवर्ती ने मोक्ष-पद को प्राप्त किया। अंत में ब्रह्मदत्त चक्रवर्ती ने महातम: पृथ्वी को पाया। इस तरह स्व-स्व कृत कर्मों से चक्रवर्तियों ने भिन्न-भिन्न गति प्राप्त किया था।

प्र.387 नारायण महापुरुष किसे कहते हैं?

उत्तर पूर्व जन्म के विशिष्ट पुण्यार्जन से जो स्वर्ग जाकर पुन: यहाँ कर्म भूमि के मनुष्य रूप में त्रिखण्ड के अधिपति रूप पुण्य से जन्मधारण करता है उसे नारायण महापुरुष कहते हैं।

प्र.388 नारायण को किन-किन नामों से पुकारते हैं?

उत्तर नारायण को अर्धचक्री, वासुदेव, गोविन्द और हरि आदिक नामों से पुकारते हैं।

प्र.389 नारायण और प्रतिनारायण (प्रतिवासुदेव, प्रतिशत्रु, प्रतिहरि) में क्या विशेषता होती है?

उत्तर चक्र रत्न प्रतिनारायण के यहाँ उत्पन्न होता है लेकिन नारायण से परास्त होने पर चक्ररत्न का स्वामी नारायण हो जाया करता है यही इन दोनों में मुख्य विशेषता है।

प्र.390 जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र सम्बन्धी वर्तमान अवसर्पिणी के दुषमासुषमा काल में उत्पन्न हुए नौ नारायणों के नाम कौन-से हैं?

उत्तर नौ नारायणों के नाम क्रमशः- 1. त्रिपिष्ट (त्रिपृष्ट), 2. द्विपिष्ट (द्विपृष्ट), 3. स्वयंभू, 4. पुरुषोत्तम, 5. नरसिंह (पुरुषसिंह), 6. पुंडरीक (पुरुषवर), 7. दत्त (पुरुषदत्त), 8. लक्ष्मण और 9. कृष्ण इस प्रकार हैं।

प्र.391 नौ नारायणों की जन्म भूमियों के नाम कौन-से हैं?

उत्तर नौ नारायणों की जन्म भूमियाँ क्रमशः 1. पौदनपुर, 2. द्वारकापुर, 3.हस्तिनागपुर, 4. हस्तिनागपुर, 5. चक्रपुर, 6. कुशाग्रपुर, 7. मिथलापुर, 8. अयोध्यापुरी और 9. मथुरानगरी इस तरह बतलाई गई हैं।

प्र.392 त्रिपिष्ट आदिक नौ नारायणों के जनक और जननी के नाम कौन-से थे?

उत्तर त्रिपिष्ट आदिक नौ नारायणों के जनक व जननी के नाम क्रमशः -
1. प्रजापति-मृगावती, 2. ब्रह्मभूत-माधवी, 3. रौद्रनन्द-पृथिवी, 4. सौम-सीता, 5. प्रख्यात-अम्बिका, 6. वरसेन-लक्ष्मी, 7. शिवाकर-केशिनी, 8. दशरथ-सुमित्रा, 9. वसुदेव-देवकी इस तरह नाम थे।

प्र.393 पूर्व कथित नारायणों प्रतिशत्रु-प्रतिनारायणों के नाम क्या थे?

उत्तर नौ प्रतिनारायणों के नाम क्रमशः - 1. अश्वग्रीव, 2. तारक, 3. मेरक, 4. निशुंभ, 5. प्रल्हाद (प्रहरण), 6. मधुकैटभ, 7. बली, 8. रावण और 9. जरासंध इस तरह थे।

प्र.394 नौ प्रतिनारायणों की जन्म-राजधानियों के नाम क्या थे?

उत्तर नौ प्रतिनारायणो की जन्म-राजधानियाँ क्रमशः - 1. अल्कापुर, 2. विजयपुर, 3. नदनपुर, 4. हरिपुर, 5. सिंहपुर, 6. पृथ्वीपुर, 7. सूर्यपुर, 8. लंका और 9. राजगृही इस प्रकार थे।

प्र.395 सर्व नारायणों और प्रतिनारायणों की भविष्य की गति (अगले भव) का क्या नियम है?

उत्तर सर्व नारायण और प्रति नारायण भोग-रुचि और बहुल-परिग्रह की आशा से मरणकर अधोलोक वासी होते हैं। नौ नारायण और प्रतिनारायण क्रमशः -1. महातम प्रभा पृथ्वी में, 2. तमः प्रभा पृथ्वी में, 3. तम:प्रभा पृथ्वी में, 4. तमः प्रभा पृथ्वी में, 5. तम:प्रभा पृथ्वी में, 6. तम:प्रभापृथ्वी में 7. धूम प्रभा पृथ्वी में, 8. पंकप्रभा पृथ्वी में और 9. बालुका प्रभा पृथ्वी में पहुँचे थे।

प्र.396 प्रत्येक अर्धचक्री के कौन-से आयुध अथवा महा रत्न कौन-से होते हैं?

उत्तर प्रत्येक अर्धचक्री के 1. सुनन्दक नामक खड्ग, 2. पञ्चजन्य नामक शंख, 3. शार्ङ्ग नामक धनुष, 4. सुदर्शन नामक चक्र, 5. कौस्तुभ नामक मणि, 6. अमोघा नामक शक्ति और 7. कौमुदि नामक गदा इस तरह सप्त रत्न होते हैं।

प्र.397 बलभद्र महापुरुष किन्हें कहते हैं?

उत्तर बलभद्र महापुरुष नारायण के सगे भाई होते हैं ये चार या पाँच रत्नों के स्वामी तथा अपार शक्ति के धारक व वैभवशाली होते हैं।

प्र.398 जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र सम्बन्धी वर्तमान अवसर्पिणी के दुषमासुषमा काल में उत्पन्न हुए नौ बलभद्रों के नाम क्या थे, वे कौन-से तीर्थंकरों के काल में उत्पन्न हुए और उन्होंने आगे कौन-सी गति को प्राप्त किया?

उत्तर नौ बलभद्रों के नाम, तीर्थकाल और आगे प्राप्त हुई उनकी गति क्रम तालिका इस प्रकार है-

क्र.	नाम	तीर्थकाल	निर्वाण व गति-प्राप्ति
1.	विजय	भ. श्रेयांसनाथ के तीर्थ में	निर्वाण (मोक्ष)
2.	अचल	भ. वासुपूज्य के तीर्थ में	निर्वाण
3.	सुधर्म (भद्र)	भ. विमल के तीर्थ में	निर्वाण
4.	सुप्रभ	भ. अनन्तनाथ के तीर्थ में	निर्वाण
5.	सुदर्शन	भ. धर्मनाथ के तीर्थ में	निर्वाण
6.	नन्दीषेण (अरनन्द)	भ. अरहनाथ के बाद	निर्वाण
7.	नन्दीमित्र (नन्दन)	भ. मल्लिनाथ के बाद	निर्वाण
8.	रामचन्द्र	भ. मुनिसुव्रत के बाद	निर्वाण
9.	बलिराम (पद्म)	भ. नेमिनाथ के तीर्थ में	ब्रह्म स्वर्ग

प्र.399 बलभद्रों को प्राप्त होने वाले चार या पाँच रत्नों अथवा आयुधों के नाम कौन-से थे?

उत्तर 1. रत्नमाला (हार), 2. लांगल (अपराजिनामक हल), 3. मूसल, 4. स्यन्दन (जिसका अर्थ जन दिव्य-गदा या दिव्य रथ भी करते हैं) और 5. शक्ति इस तरह पाँच रत्न तथा अन्य मत से 1. हलायुध, 2. बाण, 3. गदा और 4. भाला ऐसे चार महारत्न होते हैं।

प्र.400 रुद्र नामक पुरुष कौन कहलाते हैं? उनके नाम, वे किन तीर्थंकरों के तीर्थ काल में उत्पन्न हुए एवं उनका अगला भव कौन-सा हुआ था?

उत्तर

क्र.	नाम	तीर्थकाल	गति गमन
1.	भीमवली	भ. ऋषभनाथ के तीर्थ में	महातम:प्रभा पृथ्वी
2.	जितशत्रु (बलि)	भ. अजितनाथ के तीर्थ में	महातम:प्रभा पृथ्वी
3.	शंभु-रुद्र	भ. पुष्पदन्त के तीर्थ में	तम:प्रभा पृथ्वी
4.	वैश्वानर (विश्वानल)	भ. शीतलनाथ के तीर्थ में	तम:प्रभा पृथ्वी
5.	सुप्रतिष्ठ	भ. श्रेयांसनाथ के तीर्थ में	तम:प्रभा पृथ्वी
6.	अचल	भ. वासुपूज्य के तीर्थ में	तम:प्रभा पृथ्वी

7.	पुंडरीक	भ. विमलनाथ के तीर्थ में	तम:प्रभा पृथ्वी
8.	अजितंधर	भ. अनन्तनाथ के तीर्थ में	धूम प्रभा पृथ्वी
9.	जितनाभि (अजिनाभि)	भ. धर्मनाथ के तीर्थ में	पंक प्रभा पृथ्वी
10.	पीठ	भ. शान्तिनाथ के तीर्थ में	पंक प्रभा पृथ्वी
11.	सात्यकी पुत्र-स्थाणु	भ. महावीर के तीर्थ में	बालुका प्रभा पृथ्वी

प्र.401 कामदेव किन्हें कहते हैं?

उत्तर तीर्थंकरों के काल में अनुपम-अत्यन्त सुन्दर रूप को धारण करने वाले पुण्यशाली, उत्कृष्ट सुख भोक्ता तद्‌भव मोक्षगामी (जितेन्द्रिय बनकर मोक्ष पद पाने वाले) सत्पुरुष (महापुरुष) कामदेव कहलाते हैं।

प्र.402 जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र सम्बन्धी वर्तमान अवसर्पिणी के दुषमा-सुषमा काल में उत्पन्न हुए चौबीस कामदेवों के नाम तीर्थकाल और उनके निर्वाण क्षेत्र को तालिका में दर्शाइये?

उत्तर चौबीस कामदेवों के नाम, तीर्थकाल और निर्वाण क्षेत्र क्रमश:-

क्र.	नाम	तीर्थकाल	निर्वाणक्षेत्र
1.	बाहुबली	ऋषभनाथ	पोदनपुर
2.	प्रजापति	अजितनाथ	पोदनपुर
3.	श्रीधर	संभवनाथ	पोदनपुर
4.	दर्शनभद्र	अभिनन्दनाथ	पोदनपुर
5.	प्रसेनचन्द्र	सुमतिनाथ	पोदनपुर
6.	चन्द्रवर्ण	पद्मप्रभ	पोदनपुर
7.	अग्निमुख (अनलवर्ण)	सुपार्श्वनाथ	पोदनपुर
8.	सनत्कुमार	चन्द्रप्रभ	सिद्धवरकूट
9.	वत्सराज	पुष्पदन्त	सिद्धवरकूट
10.	कनकप्रभ	शीतलनाथ	सिद्धवरकूट
11.	मेघप्रभ	श्रेयांसनाथ	सिद्धवरकूट
12.	शांतिनाथ	शांतिनाथ	सम्मेदशिखर
13.	कुन्थुनाथ	कुंथुनाथ	सम्मेदशिखर
14.	अरहनाथ	अरहनाथ	सम्मेदशिखर
15.	विजयराज	अरहनाथ	सिद्धवरकूट
16.	श्रीचन्द्र	मल्लिनाथ	सिद्धवरकूट
17.	नलराज	मल्लिनाथ	सिद्धवरकूट

18.	हनुमन्त	मुनिसुव्रतनाथ	तुंगीगिरि
19.	बलिराज	नमिनाथ	सिद्धवरकूट
20.	वसुदेव	नेमिनाथ	सिद्धवरकूट
21.	प्रद्युम्नकुमार	नेमिनाथ	ऊर्जयन्तगिरि
22.	नागकुमार	पार्श्वनाथ	कैलासपर्वत
23.	जीवन्धर	महावीर	सिद्धवरकूट
24.	जम्बूस्वामी	महावीर	जम्बूवन

प्र.403 भरत चक्रवर्ती के सत्ता अभिमान को चूर कर त्रययुद्ध में परास्त करने वाले और भ्रात पर चक्र चलाने रूप स्वार्थी संसार से विरक्त हो प्रवज्या (दीक्षा) धारण कर एक वर्ष तक उपवास धारण कर खड्गासन-कायोत्सर्ग में ध्यान कर कैवल्य की उपलब्धि द्वारा गन्धकुटी में विराजित हो जन-जन का क्षेम करने वाले महाबलशाली कामदेव और राजपद से अलंकृत बाहुबली को मोक्ष की प्राप्ति किन तीर्थंकर के पूर्व किन पुण्यात्मा के पश्चात् हुई थी?

उत्तर ऐसे कामदेव बाहुबली को तीर्थंकर ऋषभदेव के पूर्व एवं भरत चक्रवर्ती के छोटे भाई अनन्तवीर्य अपर नाम महासेन के मोक्ष जाने के पश्चात् मोक्ष की प्राप्ति हुई थी।

प्र.404 कामदेव-बाहुबली और अनन्तवीर्य ने सांसारिक वैभव का त्यागकर वैरागी बन मोक्ष-पथ को किस कारण अपनाया था?

उत्तर भरत चक्रवर्ती के द्वारा बाहुबली व अनन्तवीर्य को अपनी दासता स्वीकार करवाने या अपने चरणों में नम्रीभूत करने के हटाग्रह रूप व्यवहार से दु:खी-उदासीन होकर असार रूप संसार को त्यागकर अनन्तवीर्य (महासेन) और कामदेव-बाहुबली ने मोक्ष का पथ अपनाया था।

कविता

गुरु के सुमिरण भाव से बिगड़ी बने अनंत।
रातें सर्वारम्भ में ध्यावत हैं सब संत।।

संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर की बगिया के पुण्य महान।
नमन् करूं इनके चरणों में आर्जवसागर जिनका नाम।।

शिखरचंद कुल के ये गौरव गांव फुटेरा शुभ स्थान।
मां माया की आंख के तारे पारसचंद था इनका नाम।।

शांतिनाथ की महिमा देखो क्षेत्र पनागर में भारी ।
मोक्षमार्ग के व्रत को लेकर पारस बन गये ब्रम्हचारी ।।

सिद्ध क्षेत्र अहारजी प्यारा क्षुल्लक दीक्षा हुई जहां ।
ऐलक दीक्षा श्री थुबोनजी आदि जिन को करें प्रणाम।

विश्व वन्दनीय विद्या गुरु ने सिद्ध क्षेत्र सोनागिर पर।
अष्ट मुनि संघ दीक्षा दे दी वीर जयंती का अवसर।।

महाव्रती बन एक वर्ष का मौन महाव्रत धार लिया।
इतने रत थे ज्ञान ध्यान में, संघ में कहते सब भगवान।

महावीर के प्रतिनिधि हो तुम कृति हो विद्यासागर की ।
आगम वेत्ता संघ के नायक करें सेव जिनवाणी की।

मोक्षमार्ग के उपदेशों से जन-जन का कर रहे कल्याण।।
आचार्यश्री सीमंधरजी से, मिला आचार्य पद गुरु महान ।।

-लोकेश जैन,
शाहदरा, दिल्ली

सम्यग्ज्ञान-भूषण व सिद्धान्त-भूषण पदवी हेतु त्रैमासिक धार्मिक प्रश्न-पत्र

समय : 15 दिन | अंक : 100

❖ 20 प्रश्नों में से प्रत्येक प्रश्न पर 5-5 अंक समान हैं। ❖ सभी प्रश्नों के उत्तर लाइन वाले पेपर्स पर पेरा बनाकर लिखें। ❖ उत्तर राष्ट्र-भाषा हिन्दी में ही लिखें। ❖ उत्तर लिखकर काटे जाने या घिसे जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।

प्र.1. भगवान बाहुबली के लिए मोक्ष की प्राप्ति किसके पूर्व व किसके बाद हुई थी?

प्र. 2. बालभद्र महापुरुष किन्हें कहते हैं?

प्र. 3. कामदेव बाहुबली और अनन्तवीर्य ने मोक्षपथ किस कारण अपनाया था?

प्र. 4. कामदेव महापुरुष किन्हें कहते हैं?

प्र. 5. नारायण और प्रतिनारायण में क्या विशेषता होती है?

प्र. 6. नारायण महापुरुष किन्हें कहते हैं?

प्र. 7. चक्रवर्ती महापुरुष कौन कहलाते हैं?

प्र. 8. चक्रवर्ती के दशांगभोग कौन-से हैं?

प्र. 9. चक्रवर्ती के चौदह रत्नों के नाम क्या हैं?

प्र.10. चक्रवर्ती के चूड़ामणि रत्न की क्या विशेषता है?

प्र.11. चक्रवर्तियों की नवनिधियाँ कौन-सी थीं?

प्र.12. चक्रवर्तियों की नव निधियों का आकार व प्रमाण कैसा था?

प्र.13. चक्रवर्ती की नवनिधियों की रक्षा कौन करता है?

प्र.14. चक्रवर्ती की सर्व-रत्न निधि क्या फल देती है?

प्र.15. राजाओं के चार कर्त्तव्य कौन-से होते हैं?

प्र.16. चक्रवर्ती के अधीनस्थ कितने देश होते हैं?

प्र.17. चक्रवर्ती के राज्य में कितनी गौ-शालाएँ होती हैं?

प्र.18. चक्रवर्ती के शंख, भेरी पटहों की संख्या व उनकी शब्द-श्रवण दूरी कितनी होती है?

प्र.19. भरत चक्रवर्ती के कौन-से पुत्र ने मिथ्यामत के प्रचार से भवभ्रमण कर कब मोक्ष पाया था?

प्र.20. भरत चक्रवर्ती के 923 पुत्रों ने मोक्ष पुरुषार्थ को किस तरह सफल बनाया था?

आधार : आचार्यश्री आर्जवसागर विरचित-**'आगम-अनुयोग'**, (प्रश्नोत्तर प्रदीप)

प्रश्न पत्र के पूर्व में दिये गये प्रश्नोत्तरों को पढ़कर उनका चिंतवन-मंथन कर उत्तर-पुस्तिका की पूर्ति करें।

परीक्षार्थी परिचय

नाम.. उम्र ....

पिता/माता/पति का नाम ....

पता ....

....

मोबाईल/फोन नं. ....

सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु परीक्षार्थी के लिए नियमावली

1. उपर्युक्त पदवी हेतु परीक्षार्थी की उम्र कम-से-कम 13 वर्ष पूर्ण और अधिक-से-अधिक आंखों की दृष्टि और लेखनी के स्थिर रहने तक रहेगी।
2. परीक्षार्थी अवश्य रूप से सप्त-व्यसनों अथवा मद्य, मधु, मांस का त्यागी एवं तीर्थंकर व उनकी जिनवाणी का श्रद्धालु होना चाहिए।
3. जो महानुभाव भाव-विज्ञान पत्रिका के सदस्य हैं उन्हें परीक्षा सामग्री प्रश्नोत्तर रूप में भाव-विज्ञान पत्रिका के साथ संलग्न रूप से सतत रूप से चार वर्षों तक प्राप्त होती रहेगी।
4. चारों अनुयोगों के शास्त्रों सम्बन्धी क्रमश: प्राप्त होने वाले प्रश्नोत्तरों तथा अंत में दिये गये प्रश्न-पत्र को स्वयं पढ़कर हल करें और प्रेषित करें तथा अन्य जनों तक भी परीक्षा में भाग लेने की जानकारी अवश्य देने का पूर्ण प्रयास करें। (इस कार्य हेतु इंटरनेट का भी उपयोग कर सकते हैं।)
5. जो महानुभाव पत्रिका के सदस्य नहीं हैं उन्हें प्रश्नोत्तर रूप सामग्री प्राप्त करने हेतु डाक व्यय का भुगतान स्वत: करना होगा।
6. परीक्षार्थी के लिए यह आवश्यक होगा कि वे प्रश्नोत्तरी व प्रश्नपत्र पाते ही एक माह के अन्तर्गत साफ-सुथरे रजिस्टर के पेपर्स पर पूर्ण शुद्धता और विनयपूर्वक उत्तर लिखकर निम्नलिखित पते पर भेजने का उपक्रम करें।
7. उत्तर पुस्तिका पर अंक (नम्बर) देने का भाव उत्तर-पुस्तिका में वर्णित उत्तरों की शुद्धता और लिखावट आदि पर निर्भर करेगा।
8. परीक्षार्थी से ऑनलाइन या फोन द्वारा उत्तर पूछने की पहल भी की जा सकती है अत: अपने पते के साथ ई-मेल एड्रेस या मोबाईल/फोन नं. अवश्य लिखें।
9. उत्तर लिखकर काट दिये जाने पर या घिस दिये जाने पर अंक नहीं दिये जावेंगे।
10. परीक्षार्थी प्रश्नों के उत्तर स्वत: अपनी लिखावट में ही लिखें, अन्य किसी के नाम से उत्तर पुस्तिका भरकर प्रेषित किये जाने पर हमारे परीक्षा बोर्ड द्वारा उसे पदवी हेतु मान्य नहीं किया जावेगा।
11. कदाचित् किसी भव्य द्वारा किसी विशेष परिस्थिति में परीक्षा न दे सकने के कारण और उनके आग्रह किये जाने पर उन्हें प्रश्नोत्तरी व प्रश्नपत्र उपलब्ध कराये जाने की व्यवस्था परीक्षा-बोर्ड द्वारा की जा सकेगी।
12. सम्यग्ज्ञानभूषण एवं सिद्धांतभूषण पदवी सम्बन्धी उत्तीर्णता प्राप्त करने वाले भव्य गणों को भगवान महावीर आचरण संस्था समिति के द्वारा दो या चार वर्षों में प्रमाण पत्र सह सम्मानित किया जावेगा।
13. प्रश्नोत्तरी व प्रश्न-पत्र मंगवाने हेतु परीक्षा-बोर्ड के निम्न लिखित पदवीधारी से सम्पर्क करें:-

भाव-विज्ञान पत्रिका के	भ. महावीर आचरण संस्था	भ.महावीर आचरण संस्था
प्रधान सम्पादक	समिति के मंत्री	समिति के अध्यक्ष
डॉ. अजित जैन	श्री राजेन्द्र जैन	श्री महेन्द्र जैन
मो. 7222963457	मो. 7049004653	मो. 7999246837

14. उत्तर पुस्तिका डाक/पोस्ट से निम्न पते पर प्रेषित करें:-
सम्पादक, भाव-विज्ञान, एम आई-जी 8/4, गीतांजली कॉम्पलेक्स,
कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल 462003 (म.प्र.)

गतांक से आगे

पारसचन्द से बने आर्जवसागर

-आर्यिकारत्न श्री प्रतिभामति माताजी

उदयपुर अशोक नगर में गुरुवर मुनिश्री आर्जवसागरजी की मंगल आगवानी बाजों एवं अपार जन समूह के जय-जयकारों के साथ हुई। घर-घर के सामने गुरुवर के पादप्रक्षालन एवं आरती उतारी। जिनमन्दिर के दर्शन के पश्चात् मुनिश्री का मंगल उद्‌बोधन हुआ। पश्चात् समाज के लोगों ने मुनिश्री का वास्तव्य बहुत दिनों तक रहे इस भावना से श्रीफल भेंट किये। फरवरी 2012 को पंचकल्याणक विधान एवं नवीन शिखर पर कलशारोहण एवं ध्वज स्थापना का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। जिसमें महिलाओं ने घटयात्रा में अधिक संख्या में भाग लिया। ध्वजारोहण पूर्वक कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। बहुत लोगों ने इस कार्यक्रम में सौधर्म इन्द्रादि पात्र बनकर प्रभु की भक्ति करके सातिशय पुण्यार्जन प्राप्त किया। मण्डल पर मंगल कलश स्थापना पूर्वक विधान प्रारम्भ हुआ। पश्चात् गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये और अन्त में श्रीजी की शोभा यात्रा विशाल जुलूस के रूप में सम्पन्न हुई एवं नवीन शिखर पर कलश स्थापना श्री अनिल जी ठोलिया परिवार एवं ध्वज स्थापना श्री शान्तिलाल टाया परिवार ने की तथा ''सम्यग्ज्ञान शिक्षण शिविर'' भी सम्पन्न हुआ था। पश्चात् गुरुवर ने सर्वऋतु विलास आदि आजु-बाजू के कॉलोनी में विहार किया तत्पश्चात् गुरुवर विहार करते हुए सिरोही से होते हुए बीच में स्थित श्वेताम्बर के पावापुरी पहुँचे एवं वहाँ पर निर्मित गौशाला का अवलोकन किया। फिर भेरुतारक से सीढ़ियाँ चढ़कर माउण्ट आबू पहुँचे। यह वहाँ का सबसे ऊँचा स्थल माना जाता है। वहाँ पर स्थित दिगम्बर जैन काँच के मन्दिर में भ.आदिनाथ एवं भ.कुन्थुनाथ का मन्दिर आदि तीन दि.जैन मंदिरों का दर्शन किया। तीन दिनों के प्रवास के उपरान्त गुरुवर ने ससंघ मंगल विहार आबू रोड से विहार करते हुए गुजरात प्रान्त में मंगल प्रवेश किया। दाँता गाँव पहुँचकर प्राचीन आदिनाथ की प्रतिमा का दर्शन किया। पश्चात् विहार करते हुए सिद्धक्षेत्र तारंगाजी पर मंगल प्रवेश हुआ। यहाँ से वरांग, वरदत्त सायरदत्तादि साढ़े तीन करोड़ मुनि मोक्ष गये हैं। तलहटी में स्थित मूलनायक श्री संभवनाथ भगवान् आदि 20 मन्दिरों का और सिद्ध शिला व कोटिशिला नामक दोनों पहाड़ियों का दर्शन किया और तीन-चार गुफाओं का भी अवलोकन किया ये गुफायें मुनियों के ध्यान से प्रसिद्ध हैं। इस यात्रा में उदयपुर वाले राहुल जैन (बाकलीवाल) आदि श्रावकगण साथ में थे। पश्चात् गुजरात वालों के नम्रनिवेदन से गुरुवर उमता, महेसाणा, राजकोट से होते हुए फिर सि.क्षे. गिरनार की ओर आगे बढ़े और जूनागढ़ में बड़ी धूमधाम के साथ मंगलप्रवेश हुआ। वहाँ पर गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज के पच्चीसवें दीक्षा (रजत जयन्ती) वर्ष के उपलक्ष्य में श्री 1008 नेमिनाथ भगवान के त्रय कल्याणक स्थली ऊर्जयन्तगिरि (गिरनार) परिसर जूनागढ़ में मुनिसंघ के सान्निध्य में भव्य आयोजन के साथ भ. महावीर की जन्म-जयन्ती एवं गुरुवर की 25वीं दीक्षा जयन्ती का कार्यक्रम अप्रैल 4 और 5 को भव्यता के साथ रखा गया। जिसमें 5 तारीख को प्रात: गुरुवर का संघ के साथ जिनालय दर्शन पूर्वक वाद्य घोष के साथ मंच की ओर पदार्पण हुआ। पश्चात् भ. महावीर स्वामी एवं आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के चित्र अनावरण एवं दीप प्रज्ज्वलन

किया गया। ब्र. बहिनों द्वारा मंगलाचरण किया गया। गुरुवर आर्जवसागरजी का पादप्रक्षालन श्रीमान् नरेश भाई एवं कनुभाई सूरत के साथ श्री भरत जैन एवं अरविन्द जैन दमोह वालों ने किया। पश्चात् भ.महावीर की एवं आचार्यश्री व गुरुवर की पूजन बड़ी भक्ति भाव से की गयी। 25 भव्यों के द्वारा मुनिवरश्री 108 आर्जवसागरजी के लिए शास्त्र दान दिये गये। पश्चात् बाहर से पधारे अतिथियों का सम्मान किया गया। विद्वत् उद्‌बोधन के रूप में मुनिश्री द्वारा हुई पच्चीस वर्ष की प्रभावना के संदर्भ डॉ. अजित जैन भोपाल ने अपने पवित्र भाव व्यक्त किये। पच्चीसवें दीक्षा-वर्ष (रजत जयन्ती वर्ष) पर पच्चीस धार्मिक कार्य के संकल्प करने वालों के सम्मान की बात कही। तदुपरान्त 25 दीपकों से पूज्य गुरुवर की आरती की गयी। इस महोत्सव में अनेक प्रदेश (गुजरात, राजस्थान, मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, तमिलनाडु) के लोगों ने पुण्य लाभ लिया। गुरुवर से 25 वर्षों में हुए धर्म प्रभावना के विशेष कार्यों के सम्बन्ध में डॉ.अजित जैन ने मंच से जनता के सामने भाव विभोर करने वाले पावन प्रसंग रखे और लोगों ने करतल ध्वनि से इसकी सराहना की। तदुपरान्त मुनिभक्त लोगों ने 25वें रजत वर्ष के उपलक्ष्य में 25 शुभ कार्य करने के लिए मुनिश्री से अपना भाव व्यक्त कर आशीर्वाद लिया। श्री कमल काला जयपुर की ओर से मन्दिरों के लिए अष्ट प्रतिहार्य, अष्टमंगल वितरित किये गये। किसी ने पच्चीस तरह के नियम लिये और किसी ने पच्चीस शास्त्र या भक्ति स्तोत्रों का याद करने (कण्ठपाठ करने का) और किसी ने 25 तरह के विधान करने का नियम लिया। अन्त में गुरुवर का प्रवचन हुआ जिसमें नेमि, राजुल, प्रद्युम्नकुमार, उदधि कुमारी इनके वैराग्य के प्रसंग में और गुरु उपकार व सच्चा जन्म कब होता है? आदि के बारे में उपदेश दिया और सायंकाल में तलहटी में स्थित बन्डीलाल धर्मशाला की ओर विहार कर दिया। गुरुवर ससंघ अप्रैल 6 तारीख को प्रात: 6 बजे तलहटी से निकलकर ऊर्जयन्तगिरि (गिरनार) 5 वीं टोंक तक की वंदना हेतु निकले। दूर-दूर से आये हुए भक्तों के साथ पर्वत की वंदना बहुत सानन्द रूप से सम्पन्न हुई। गुरुवर ने यहाँ पर करीब डेढ़-दो महीने का ग्रीष्मकालीन प्रवास किया। बीच में एक बार वंदना के लिये पुलिस के प्रबन्ध के साथ गये थे। जिसमें पांचों टोंक एवं सहस्राम वन का दर्शन कर वहाँ से उतरे और जिसमें उदयपुर के राहुल जैन आदि के साथ सूरत-अहमदाबाद, उदयपुर आदि से कई लोग संयोगी बनते रहे। परम रमणीय पर्वत आरावलियों व घने जंगल से सुशोभित गिरिराज गिरनार व ऊर्जयन्तगिरि से भ. नेमिनाथ सहित अनिरुद्ध कुमार, शम्भुकुमार और प्रद्युम्नकुमार आदि बहत्तर करोड़ सात सौ मुनियों ने निर्वाण मोक्ष पद प्राप्त किया है एवं जिस पर्वत का स्पर्श मात्र महापुण्य का कारण है। इस पवित्र वर्णन को गुरुवर ने नवीन कविता बनाकर उसमें बड़ा सुन्दर चित्रण किया एवं साम्यभावना, सामायिक पाठ की रचना की। ऐसे गिरनार पर्वत की तलहटी में बने बंडीलाल जी दिगम्बर जैन मन्दिर एवं धर्मशाला के अन्तर्गत दिगम्बर जैन मन्दिर के परिसर में दिनांक 26 मई 2012 को पूरे देश से पधारे लगभग 150 धर्मानुरागी की उपस्थिति में तथा प.पू. गुरुवरश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के सान्निध्य में श्रुतपञ्चमी महापर्व पर 'श्रुतस्कन्ध' महामण्डल विधान का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस कार्यक्रम में दिल्ली से श्री लोकेशकुमार जी, सुशील गंगवाल पाण्डिचेरी, अजमेर से श्री अजयजी दनगसिया, जयपुर से श्री सुशीलजी पहाड़िया एवं पारस कासलीवाल, सूरत से श्री नरेशकुमार जी, उदयपुर से श्री सुरेशचंदजी, पथरिया से श्रीमती मायादेवी एवं डॉ. संजय जैन, फुटेराकलाँ से श्री मनोजकुमारजी श्री राजेश जी, भोपाल से डॉ. सुधीर जैन,

जूनागढ़ से श्री प्रदीपजी एवं श्री बंडीलाल दिगम्बर जैन धर्मशाला के ट्रस्टी श्री धनपालजी एवं श्री तेजस तलाटी भी उपस्थित थे। सभी ने मुनिवर के चरणों में श्रीफल भेंटकर आशीर्वाद प्राप्त किया। श्रुतस्कन्ध विधान के पश्चात् कार्यक्रम के प्रारम्भ में आचार्यश्री विद्यासागरजी एवं गुरुवर श्री आर्जवसागरजी महाराज के चित्रों का अनावरण किया गया और ज्ञान दीप प्रज्ज्वलन किया गया। इस अवसर पर श्री दिगम्बर जैन समाज सूरत के पदाधिकारियों ने प.पू. गुरुवर आर्जवसागरजी को श्रीफल भेंटकर चातुर्मास हेतु सूरत की तरफ गमन करने का निवेदन किया। साथ ही दिगम्बर जैन मन्दिर बन्डीलाल के ट्रस्टी श्री धर्मपाल जी एवं तेजस तलाटी ने मुनिश्री से चातुर्मास का निवेदन किया। धर्म सभा का प्रारम्भ संघस्थ व्रतियों के मंगलाचरण के द्वारा हुआ और श्रावकों द्वारा मुनिसंघ को शास्त्र भेंट किये गये। तत्पश्चात् गुरुवर का मंगल प्रवचन हुआ।

27 मई को मुनिश्री ने गिरनारजी की वंदना करते हुए प्रथम टोंक पर दर्शन किए तथा वहीं पर ठहरकर 28 मई को पांचों टोंकों की वंदना कर वहीं पर आहारचर्या सम्पन्न हुयीं और मध्याह्न में चन्द्रगुफा का भी दर्शन के साथ हर्षोल्लास, उत्साह एवं भक्ति पूर्वक पूर्ण वंदना की। इस प्रकार गिरनार सिद्धक्षेत्र की तीन वंदनायें सम्पन्न करके गुरुवर का ससंघ वहाँ से 30 तारीख को शत्रुंजय (पालिताना), भावनगर, घोघा, अंकलेश्वर और सजोत होते हुए सूरत की ओर मंगल विहार हो गया।

पुण्यशाली भक्तगणों ने परम पूज्य आचार्यश्री 108 आर्जवसागरजी महाराज के द्वारा रचित तीर्थोदय-काव्य के प्रकाशन में आर्थिक सहयोग देकर पुण्यार्जन किया है। मगवान महावीर आचरण संस्था समिति इन सभी को हार्दिक बधाईयाँ एवं शुभकामनाएँ प्रेषित करती है।

1. श्री जितेन्द्र जैन ''पिपरिया वाले'' (मुनिश्री 108 निरोगसागरजी महाराज की गृहस्थावस्था के भाई), शांतिनगर बण्डा।
2. श्री महेन्द्र जैन ''भूसा वाले'' अध्यक्ष, श्री 1008 दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पज़नारी, शांतिनगर, बण्डा।
3. श्री कमलकुमार जी ''कंदवावाले'' अध्यक्ष श्री 1008 शांतिनाथ दि. जैन मंदिर, शांतिनगर, बण्डा।
4. श्री बीरेन्द्र जैन, मंत्री, श्री 1008 दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र पज़नारी, सुपुत्र शुभांशु जैन, सहायक संचालक उद्यो. जबलपुर, इंजीनियर हिमांशु जैन, शांतिनगर, बण्डा।
5. श्री अशोक जैन ठेकेदार अध्यक्ष, श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर, बण्डा।
6. डॉ. राजेन्द्र जैन ''भूसावाले'', शांतिनगर, बण्डा।
7. श्री जिनेन्द्रकुमार जैन ''बमाना वाले'', शानू मेडीकल, बण्डा।

पौराणिक संस्कृति

-श्रीनाथूलालजी जैन शास्त्री

जब सप्त सिंधु प्रदेश निवासी आर्यों में बलिदान प्रथा की प्रधानता थी तो दूसरी और गंगा के पूर्व देशों में दूसरी अहिंसा प्रधान संस्कृति का प्रसार था, जिसके निर्माता भगवान् ऋषभ थे। यह श्रमण संस्कृति थी। जब वे आर्य सप्तसिंधु से पूर्व की ओर बढ़े तो उनका वहाँ के निवासियों से संघर्ष हुआ। भगवान ऋषभ ने खेती, शिल्प, वाणिज्य आदि से आजीविका की शिक्षा दी थी। किन्तु आर्यों ने कृषि जीवन नहीं अपनाया वे कबीलों के रूप में थे। ऋषभदेव ने समाज को क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन तीनों वर्गों में समाज को विभाजित किया सबको उनके विभाग के अनुसार शिक्षण भी दिया। श्रमण संस्कृति के उपासक आर्यों के क्रियाकांड को पसंद नहीं करते थे। वे आत्मतत्त्व अन्वेषक थे।

आर्यों के कोरे कर्मकांड से लोगों की रुचि हटने लगी। तब उपनिषदों की रचना हुई। वैदिक आर्य तो मुक्ति को जानते ही नहीं थे। उनके लिए स्वर्ग ही सर्वोच्च था।

श्रमण संस्कृति में मोक्ष को ही अंतिम लक्ष्य माना गया है। उपनिषदों ने आध्यात्मिक सिद्धांतों का कथन तो किया किन्तु वैदिक क्रियाकांड का विरोध नहीं किया।

डॉ. राधाकृष्णन् लिखते हैं :-

''उपनिषदों ने प्राचीन वैदिक क्रियाकांड को ऊँचे अध्यात्मवाद से जोड़ने का प्रयत्न किया। किन्तु तत्कालीन पीढ़ी ने उससे रुचि नहीं दिखलाई। फलत: उपनिषदों का ऊँचा अध्यात्मवाद लोकप्रिय नहीं हो सका। एक ओर यह दशा थी, दूसरी ओर याज्ञिक धर्म अब भी बलशाली था। उपनिषदों का ब्रह्मवाद और वेदों का बहुदेवतावाद, उपनिषदों का आध्यात्मिक जीवन और वेदों का याज्ञिक क्रियाकांड, उपनिषदों का मोक्ष और संसार तथा वेदों का स्वर्ग और नरक, यह तर्क विरुद्ध संयोग अधिक दिनों तक नहीं चल सकता था अत: पुन:निर्माण की सख्त जरूरत थी। समय एक ऐसे धर्म की प्रतीक्षा कर रहा था जो गंभीर और अधिक आध्यात्मिक हो तथा मनुष्यों के साधारण जीवन में उतर सके या लाया जा सके। धर्म के सिद्धांत का उचित सम्मिश्रण करने के पहले यह आवश्यक था कि सिद्धांतों के उस बनावटी संबंध को तोड़ डाला जावे।''

डॉ. राधाकृष्णन् के इस चित्रण से स्पष्ट है कि जब वैदिक क्रियाकांड का विरोध हुआ और जनता की रुचि उस ओर से हटने लगी तो वैदिकों को अपनी स्थिति बनाये रखने के लिए कुछ नये परिवर्तन की जरूरत हुई। अत: उन्होंने श्रमण संस्कृति के आध्यात्मिक तत्त्व को अपनाकर उपनिषदों की रचना की। उपनिषद द्वारा जहाँ अध्यात्म की चर्चा थी वहाँ पक्ष वैदिक क्रियाकांड का, फलत: श्रमण संस्कृति के साथ मेल नहीं हो सका। यों मेल तो जगत्कर्तृत्व के संबंध में भी नहीं रहा क्योंकि श्रमण संस्कृति ईश्वर को मानकर भी जगत्कर्ता नहीं मानती। इसी कारण वेदानुयायी उसे नास्तिक की परिभाषा 'नास्तिको वेद निंदक:' जो वेद वाक्य नहीं मानते वे नास्तिक हैं।

श्री पं. गोपालदास जी वरैया :-

जो महान विद्वान थे, कहा करते थे कि 'नास्ति को वेद निंदक:' अर्थात् वेद निंदक: को नास्ति-वेद

का निंदक कौन नहीं है। जो अहिंसा में विश्वास करते हैं वे वेद हिंसा के समर्थक वेदों की निंदा करते ही हैं यथा जैन, सांख्या आदि। इस संबंध में लोगों को 'याज्ञिकी हिंसा हिंसा न भवति' यज्ञ में की गई हिंसा हिंसा नहीं मानी जाती, कह कर समझाने की कोशिश की जाती रही है।

दोनों संस्कृतियों में यह विरोध होने से पुन:निर्माण की आवश्यकतानुसार तेईसवें तीर्थंकर पार्श्वनाथ का जन्म वाराणसी में हुआ। श्री पार्श्वकुमार वन में एक तापस को पंचाग्नितप करते हुए एक काष्ट की अग्नि में जलते हुए नाग-नागिन को देखा और तापस की निंदा की। पार्श्व कुमार ने दीक्षा लेकर केवलज्ञान प्राप्त किया और विहार कर जन साधरण को अहिंसा का महत्व समझाया।

वैष्णव एवं शैव धर्म

दीवान बहादुर कृष्ण स्वामी आयंगर (एंशिएंट इंडिया पृ.588) ने लिखा है- ''कि उस समय एक ऐसे धर्म की आवश्यकता थी जो ब्राह्मण धर्म के इस पुन:निर्माण काल में बौद्धधर्म और जैन धर्म के विरुद्ध जनता को प्रभावित कर सकता, उसके लिए एक मानव देवता और उसकी पूजा विधि की आवश्यकता थी।'' पुन:निर्माण ने एक ऐसे धर्म को जन्म दिया जो, श्री डॉ.राधाकृष्णन के अभिप्राय (इंडियन फिलोसफी पृ.275-76) के अनुसार उतना नियमबद्ध नहीं था। तथापि उपनिषदों के धर्म से अधिक संतोषप्रद था। उसने एक संदिग्ध और शुष्क ईश्वर के बदले में एक जीवित मानवीय परमात्मा दिया। भगवद्गीता, जिसमें कृष्ण विष्णु के अवतार तथा उपनिषदों के पर ब्रह्म माने गये, पंचरात्र समुदाय और श्वेताश्व तथा बाद में अन्य उपनिषदों का शैवधर्म इसी धार्मिक क्रांति के फल हैं।

प्रसिद्ध इतिहासज्ञ स्व. ओझा जी ने-

(राजपूताने का इतिहास प्र.सं.पृ.10-11) लिखा है- कि 'बौद्धधर्म और जैनधर्म के प्रचार से वैदिक धर्म को बहुत हानि पहुँची। इतना ही नहीं, किन्तु उसमें परिवर्तन करना पड़ा और वह तपे साँचे में ढलकर पौराणिक धर्म बन गया। उसमें बौद्ध और जैनों से मिलती धर्म संबंधी बहुत सी नई बातों ने प्रवेश किया। इतना ही नहीं, किन्तु विष्णुदेव की पूजा उतनी ही प्राचीन है जितना ऋग्वेद तथा प्राचीन वैदिक काल में भी विष्णु एक बड़े देव माने जाते थे। वेदिक संप्रदाय में विष्णु की मौलिक स्थिति का पता चलता है,किन्तु वैष्णव संप्रदाय का पता उस काल में नहीं चलता। महाभारत के अर्वाचीन भाग में वैष्णव नाम आया है। श्री हेमचंद्रराय चौधरी का मत (अष्टादश पुराणां, श्रवाणाद यद् फलंभवेत्। तत्फलं समवाप्नोति वैष्णवे नात्र संशय: 97) है कि महाभारत के उक्त भाग का ठीक-ठीक रचना काल निश्चित नहीं है किन्तु अनेक प्रमाणों के आधार पर यह स्पष्ट निकल सकता है कि ईस्वी सन् की पाँचवी शती के आगे-पीछे 'परम वैष्णव' शब्द सर्वसाधारण में प्रयुक्त हुआ है। ब्राह्मण ग्रंथों का विष्णु भक्ति की अपेक्षा यज्ञ से ही अधिक संबंध है। अनेक शिलालेखों में यह प्रमाणित होता है कि भागवत् लोग वासुदेव के भक्त थे। महाभारत (शांतिपर्व) में लिखा है कि कृष्ण वासुदेव ने अर्जुन को भागवत धर्म का उपदेश दिया।''

सर आर.जी. भंडारकर के अनुसार कहा जाता है कि श्री कृष्ण ने मथुरा राज्य के भागवत धर्म की स्थापना की। यह भागवत धर्म ही आज के वैष्णव धर्म का पूर्वज है।

अन्वेषकों का वक्तव्य है कि प्रारंभ में भागवत धर्म का और बाह्मण धर्म का केवल सख्यभाव था। किन्तु जब मौर्य वंशी राजाओं ने बौद्धधर्म के प्रचार का बीड़ा उठाया तो दोनों धर्म आपस में मिल गये और इस मिलन के फलस्वरूप वासुदेव कृष्ण का तथा ब्राह्मण धर्म के देवता नारायण और विष्णु का भी एकीकरण कर दिया गया।

इतिहास से पता चलता है कि उत्तर भारत के शक और कुशान राजवंश वासुदेव कृष्ण के भागवत धर्म के पक्षपाती नहीं थे। जबकि गुप्त राजाओं के कुलदेवता वासुदेव थे। गुप्त राजाओं ने भागवत धर्म के प्रति वही किया जो अशोक ने बौद्धधर्म के लिए। गुप्तों के पतन अैर हूणों के आगमन के साथ ही उत्तर भारत के भागवत धर्म की महत्ता जाती रही। किन्तु दक्षिण भारत में इसने पैर जमाये और महाराष्ट्र को पकड़ा। महाराष्ट्र से यह तमिल देश में गया ओर फिर चारों ओर फैलता गया।

ऊपर यह बताया गया है कि ब्राह्मण कालीन याज्ञिक क्रियाकांड की प्रतिक्रिया के फलस्वरूप भागवत धर्म का उदय हुआ। इस धर्म के गुरु जन जहाँ वैदिक क्रियाकांड की सार्वजनिक खुली भर्त्सना को रोकते थे। वहाँ कुछ नये सिद्धांतों का भी प्रचार करते थे, जिसमें एक अहिंसा भी था। छांदोग्योपनिषद के अ.3 व 117 में आत्मयज्ञ की उपासना बतलाई है। उसमें तप, दान, आर्जव, अहिंसा और सत्य वचन ही उसकी दक्षिणा बतलाई है। आगे लिखा है कि घोर अंगीरस ऋषि ने देवकी पुत्र श्री कृष्ण को यह यज्ञ दर्शन सुनाया, जिससे वह अन्य विधाओं के विषय में तृष्णाहीन हो गए। (भारतीय धर्म और अहिंसा ले. कैलाश चंद जी शास्त्री) अ.इं.र.पृ. 726-27 से विदित होता है कि मैगस्थनीज के समय में विष्णु पूजा की तरह ही शिव पूजा भी अच्छी तरह प्रचलित हो चुकी थी। सीति ने महाभारत में प्राचीन धर्म को बचाने के लिए बौद्ध धर्म के विरोधी सभी उपधर्मों का संकलन किया है जिनमें शैवधर्म भी है। इस तरह जब वैशंपायन का भारत वैष्णव संप्रदाय से संवद्ध था तब सीति का महाभारत किसी संप्रदाय विशेष संवद्ध प्रतीत नहीं होता।

प्राचीन भारतीय इतिहास के जानकारों के यह बात अपरिचित नहीं है कि मौर्य सम्राट् या तो जैनधर्म के पोषक थे या बौद्धधर्म के? इसी से अंतिम मौर्य सम्राट् वृहद्रथ को मारकर शुंगवंशी पुश्यमित्र सम्राट् बन बैठा। उसने श्रमणों पर बड़े अत्याचार किये और वैदिक धर्म के पुनरुद्धार का प्रयत्न किया। सम्राट् अशोक ने कलिंग पर चढ़ाई करने के बाद के युद्ध में नरसंहार से द्रवित होकर भविष्य में युद्ध के बजाय प्रेम से विजय करने का संकल्प लिया था। युद्ध को तिलांजली दे दी थी।

वैदिक यज्ञ आदि के शब्दार्थ

यज्ञ के तीन भेद मिलते हैं-

1. औषधि यज्ञ- जिसमें पुष्प फूल आदि का उपयोग होता था।

2. आत्म यज्ञ- जो आध्यात्मिक रूप में किये जाते थे।

3. प्राणी यज्ञ- जिसमें पशु और नर की बलि दी जाती थी।

औषधि यज्ञ-

महाभारत (शांतिपर्व, अध्याय 337/ श्लोक 3-5-6-17) में एक चर्चा आई है- 'अजैर्यष्टव्यम्'

इस वैदिक श्रुति के अर्थ में विवाद देवताओं और ब्रह्मर्षियों में उत्पन्न हो गया। देवताओं ने कहा, यहाँ अज याने बकरे से यज्ञ करना चाहिए और ब्रह्मर्षियों ने कहा, बीजों द्वारा जो अंकुरोत्पत्ति योग्य नहीं हैं, उनसे यज्ञ करना चाहिए। बकरे का वध उचित नहीं है।

यह प्रश्न राजा वसु के पास आने पर वसु ने देवताओं का पक्ष लेकर हिंसा का समर्थन किया। वसु सत्य के प्रभाव से आकाश में चलता था किन्तु इस असत्य का समर्थन करने और ब्रह्मर्षियों के शाप से आकाश से गिरकर पाताल में चला गया। ऐसा ही विवाद उत्तर पुराण (जैनाचार्य गुणभद्र 10 वीं शताब्दी) में भी पर्वत नारद का आया है जहाँ राजा वसु ने पर्वत का पक्ष लिया और नरक में गया।

इस प्रकरण से यह स्पष्ट होता है कि पहले पशु यज्ञ नहीं थे और पीछे उनका विरोध भी किया गया था। वेदों में जो हिंसा का विधान बताया गया है वह शब्दों का विपरीत अर्थ निकालकर बताया गया है।

महाभारत (शांतिपर्व अध्याय 2 63 श्लोक 18-21) में ही लिखा है कि ब्राह्मण वेदाध्ययन में तत्पर रहते थे। स्वयं संतुष्ट थे दूसरों को संतोष की शिक्षा देते थे।

नमि और अरिष्ट नेमि तीर्थंकर के समय में हिंसक यज्ञ के विरोध में आत्म यज्ञ का स्वर प्रबल हो उठा था। नेमि तीर्थंकर ने तो विवाह की बारात में आए हुए मांसाहारी बाराती राजाओं के विरोध में बाड़े में बंद पशुओं को छुड़ाकर बिना विवाह किये गिरनार पर जिन दीक्षा ली थी। वहाँ उस समय अरिष्ट नेमि के चचेरे भ्राता श्रीकृष्णजी भी आत्मयज्ञ के प्रतिपादन में प्रयत्नशील थे। उनके द्वारा अर्जुन को उपदेश रूप में श्रीमद्भगवद्गीता अपूर्व अध्यात्म ग्रंथ है।

वृहदारण्यकोपनिषद् (गीताप्रेस से प्रकाशित उपनिषद् अंक पृ.508) चतुर्थ ब्राह्मण संतानोत्पत्ति प्रकरण में स्वस्थ पुत्र ऊक्ष एवं ऋषभ शब्दों का प्रयोग आया है। इन दोनों का अर्थ राजा राजेन्द्रनाथ व मि. राबर्ट अर्नेस्ट ह्यूम ने युवा व वृद्ध बैल कर उसके मांस खाने का समर्थन किया था, जिसका खंडन यह है कि ऊक्षयाने सोमलता (रस पूर्ण) और ऋषभ याने औषधि का पौधा होता है। यह आयुर्वेद शास्त्र चरकसंहिता खंड 1 अ.4-33 में लिखा है। प्रस्तुत उपनिषद् ग्रंथ की टिप्पणी में भी ऊक्ष और ऋषभ को वाचस्पत्प कोष के अनुसार पर्यायवाची शब्द औषधि अर्थ में बताया गया है। सुश्रुतसंहिता आयुर्वेद ग्रंथ के सूत्रस्थान नामक प्रथम खंड के 38 वें अध्याय में सैंतीस द्रव्य गुणों के अंतर्गत ऋषभ औषधि का उल्लेख है। यह ऋषभ औषधि हिमालय पर्वत के शिखर पर उत्पन्न होती है। 'भाव प्रकाश' आयुर्वेद ग्रंथ में भी इसका कथन है। इसमें गूदा नहीं होता। इसकी छोटी पत्तियाँ होती हैं। ये बैल के सींग के आकार की होती हैं। यह बलकारक होती हैं। इसकी अष्टवर्ग नामक औषधियों में गणना है।

मेघदूत (कालिदास कृत) पूर्वार्द्ध श्लोक 45 में सुरभि तनया (गौ) के आलभन से पृथ्वी पर उत्पन्न प्रवाह में चर्मण्वती (चंबल नदी) बन गई यह कविवर ने लिखा है। यहाँ अलंभन में लभ् और लांभ् के प्राप्ति और स्पर्श दोनों समानार्थ है। इसका अर्थ प्रोक्षण (धौकर साफ करना) होता है, जिसका अर्थ मारना गलत अर्थ कर हिंसा का समर्थन किया गया है।

महाभारत (शांति पर्व 123-127) में निम्नलिखित दो पद्य हैं-

संस्कृतेः रति देवस्य यां रात्रिभवसत् गृहे।
आलभ्यन्त शतंगावः सहस्राणि च विंशतिः॥ (?)
मह्यनदी चर्मराशिक्लेदात् ससृजे यतः।
ततश्च चर्मण्वतीत्येवं विख्याता सा महानदी॥

अर्थ-दशपुर के राजा संस्कृति के पुत्र राजा रतिदेव अतिथियों के लिए 20100 गायें (?)जल से धोकर साफ करते हुए उन्हें स्पर्श कर के देते थे। उस भीगी हुई चर्म राशि से जल बहकर विशाल चंबल नदी प्रकट हुई। ये राजा अहिंसक प्रसिद्ध थे। यहाँ आलंभ शब्द धोकर साफ करके स्पर्श करने अर्थ में है। संकल्प में देते समय छूकर देना होता है। गायों को मारने से चर्म को लेकर जो रक्त निकला उससे नदी बन गई यह अर्थ सर्वथा गलत है।

मनु स्मृति 5-41 में प्रक्षिप्त पद्य-

मधुपर्के च यज्ञेच, पितृवदेव कर्मणि।
अत्रैव पशवोऽहिंस्याः, नान्यः कश्चिदिति स्थितिः॥

मधुपर्क, यज्ञ, पितृकर्म, देवकर्म इनमें पशुओं की वृद्धि व उनके दुग्ध आदि उपयोग करना चाहिए। उनकी हिंसा नहीं करना चाहिए क्योंकि यहाँ पशवोऽहिंस्याः अर्थात् अहिंस्याः बनता है। यहाँ मधुपर्क का अर्थ गौरस सहित मिश्री का है, मांस का अर्थ नहीं है।

हिंस्याः में हन् हिंसा गत्योः के अनुसार गावः हन्यंतै अर्थात् गायें चलाई व बढ़ाई जाती हैं। इसी प्रकार गोमेध का अर्थ गोसंवर्धन है। अध्वर अहिंसक यज्ञ है। गो शब्द के दूध, दही, धृत, मक्खन, छाछ, मूत्र, गोबर, ये अंतर्गत पर्यायें हैं तथा गाय, गोचर्म व बाल अर्थ में भी व्यवहार होता है।

पाश्चात्य देश के कुछ अंग्रेजों ने आर्य संस्कृति को विकृत बनाने के लिए वेदों आदि के विपरीत अर्थ कर दिये हैं। जिनसे लाभ उठाकर स्वार्थी और मांसप्रिय लोगों ने हिंसा और मांस का प्रचार कर दिया। हमारे उक्त उद्धरण व कथन साफ है इसके प्रमाण रूप में देखिए-महाभारत शांति पर्व अ.265, 9 में लिखा है-

सुयमत्स्या मधु मांस मासवं कृषयेदनम्।
धूतैः प्रवर्तितं ह्येतन्नेदं वेदेषु कल्पितम्॥

अर्थ- मद्य, मछली, शहद, मांस, आस्रव (आयुर्वेद में पानक) प्राणिज भात आदि जीवहिंसा से उत्पन्न खाद्य पदार्थ इनका धार्मिक यज्ञादि वैदिक क्रियाओं में उपयोग वेदों में नहीं है। किन्तु धूर्त लोगों की कल्पनायें हैं।

पुराणों वेदों और उपनिषदों में

महाभारत में युगादि आदिनाथ ऋषभदेव तथा नेमिनाथ तीर्थंकर के ऊर्जयन्त या रेवताद्रि (गिरनार) से मोक्ष जाने का उल्लेख निम्न प्रकार है-

रैवताद्रौ जिनोनेमिः युगादि विपुलाचले।
ऋषीणामाश्रमादेव मुक्ति मार्गस्य कारणम्॥

गिरनार पर नेमि जिनेन्द्र ने और विपुलाचल कैलाश पर आदिनाथ ने स्थिरता (मुक्ति) ली। ऋषियों

के लिये ये मोक्षमार्ग के निमित्त है, इनके ध्यान से मुक्ति होती है।
स्कंद पुराण में भी ऐसा ही बताया गया है–

नेमिनाथ शिवेत्येवं नामचक्रेऽथ वामनः।

अर्थ– वामन ने भगवान नेमिनाथ नाम शिव रखा।

यजुर्वेद में लिखा है–

'ओं रक्ष-रक्ष अरष्टि नेमि स्वाहा'

हे विघ्न निवारक नेमिनाथ! हमारी रक्षा करो।

डॉ. विमलशरण लाहा ''केम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इण्डिया'' में बतलाते हैं–

अरिष्ट नेमि अथवा नेमिनाथ बाईसवें तीर्थंकर थे। 'वे एक वरद क्षत्रिय धर्म प्रचारक एवं समाज के धुरीण हो गए हैं। ये संयमी, ध्यानमग्न, चतुर और शांत स्वभावी थे। उनको सत्यदर्शन हुआ। वे शुद्ध, सत्य और धर्म में प्रवीण थे। उन्होंने समस्त बंधन नष्ट किये।''

डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल लिखते हैं–

मैंने अपनी ''भारत की मौलिक एकता'' नामक पुस्तक (पृ.22-24) में दौष्यंत भरत से भारत वर्ष लिखकर भूल की थी, इसकी ओर कुछ मित्रों ने मेरा ध्यान आकर्षित किया, उसे अब सुधार लेना चाहता हूँ।

श्री ज्वाला प्रसाद जी मिश्र ने भागवत पुराण का उल्लेख किया है–

नाभेरसा वृषभ आसुसुदेव सूनु र्येवैचार समदृष्ट जड़योग चर्यम्।
यत परम हंसस्य ऋषभः पद्मामनंति स्वस्थः प्रशांतः करण परिमुक्त संगः॥

अर्थ– अग्नींध्र पुत्र नाभि से मरु देवी पुत्र ऋषभ देव भये, सम्यक् दृष्टा, जड़ की नांई योगाभ्यास करते भये। जिनके परमहंस पद को ऋषियों ने नमस्कार कियो, स्वस्थ शांत इन्द्रिय सब संग त्यागे। जिनसे जैनमत प्रगट भयौ।

कैलाशेविपुले रम्ये वृषभोऽयं जिनेश्वरः।
चकार स्वावतारं च सर्वज्ञः सर्वगः शिवः॥ (प्रमासपुराण 5)

अर्थ– बड़े सुन्दर कैलाश पर ऋषभदेव ने सर्वज्ञ और शिव पद का अवतार लिया।

अष्टषष्ठिषु तीर्थेषु यात्रायां यत्फलं भवेत्।
श्री आदिनाथ देवस्य-स्मरणेनापि तद्भवेत॥ (मनुस्मृति)

अर्थ– 68 तीर्थों की यात्रा का जो फल होता है वह आदिनाथ ऋषभदेव के स्मरण से प्राप्त हो जाता है।

12. शिवपुराण 37/57 का प्रमाण है–

नाभे पुत्रश्च वृषभो वृषभात् भरतोऽभवत्।
तस्य नाम्ना त्विदं वर्षं भारतं चेति कीर्त्यते॥

नाभि के पुत्र वृषभ और वृषभ के पुत्र भरत हुए। भरत के नाम से इस वर्ष (देश) को भारत वर्ष कहते हैं।

13. अग्निपुराण 10/1011 क्या बताता है–

जरामृत्यु भयं नास्ति धर्मा धर्मौ युगादिकम्।
नाधर्मं मध्यमं कृत्वा तुल्याऽदेशन्तु नाभितः।
ऋषभो मरुदेव्यां च ऋषभात् भरतोऽभवत्।
ऋषभोऽदात् श्रीपुत्रे शाल्यग्रामै हरिंगतः।
भरताद् भारतं वर्ष भारताद् सुमतिस्त्वभूत्॥

उस हिमवत् प्रदेश (पूर्व नाम भारत) में जरा और मृत्यु का भय नहीं था, धर्म और अधर्म भी वहाँ नहीं थे उनमें माध्यम (समभाव) था।

वहाँ नाभिराजा के मरु देवी से ऋषभ का जन्म हुआ ऋषभ से भरत हुए। ऋषभ ने भरत को राजश्री देकर सन्यास ग्रहण कर लिया। भरत के पुत्र का नाम सुमति था। **नोट**– यह भोग भूमि के समय का कथन है।

वैदिक साहित्य के आधार से डॉ. विटरनीट्स ने (हि.इं.लि.जि. 1 पृ.52) लिखा है ''अपनी प्राचीनता के कारण वेद भारतीय साहित्य में सर्वोपरि स्थित है।''

वेद चार हैं, जिनके मंत्रों का उपयोग यज्ञानुष्ठान में होता था। होता, उद्गाता, अध्वर्यु, ब्रह्मा ये चार ऋत्विज यज्ञ में आवश्यक थे। होता मंत्रोचारण कर देवताओं का आह्वान करता था। मंत्र समुदाय का संकलन ऋग्वेद में हैं।

उद्गाता ऋचाओं को मधुर स्वर से गाता था, इसके लिए सामवेद है। यज्ञ के नाना अनुष्ठानों का संपादन अध्वर्यु करता था। इसके लिए यजुर्वेद है। सम्पूर्ण भाग का निरीक्षक बह्मा था, जिससे कोई विघ्न न आवे इसके लिए अथर्ववेद है।

ककर्दवे वृषभो युक्त आसीद्।
अवावचीत् सारथिरस्य केशी॥
दुधेर्युक्तस्य द्रवतः सहानसः।
ऋच्छंतिष्म निष्पदो मुद्गलानीम्॥

यहाँ सायण ने अपने भाष्य में– (ऋग्वेद10, 102, 6) केशी को वृषभ का विशेषण बतलाया है। यथा 'अथवा अस्य सारथि:सहायभूत: केशी प्रकृष्ट केशी वृषभ अवावचीत् भृशमशब्दयत् इत्यादि'

अर्थात् मुदगल ऋषि ने केशी वृषभ को शत्रुओं का विनाश करने के लिए अपना सारथी नियुक्त किया। इस ऋचा का आध्यात्मिक अर्थ यह है कि मुदगल ऋषि की जो इन्द्रियाँ पराङ्मुखी थीं, वे उनके योगयुक्त ज्ञानी केशी वृषभ का धर्मोपदेश सुनकर अन्तर्मुखी हो गई। ऋग्वेद में जो केशीसूक्त आया है, वह ऋषभदेव के उल्लेख का सूचक है। डॉ. हीरालालजी ने भी यही लिखा है कि ऋग्वेद में मुनियों का निर्ग्रंथ साधु तथा उन मूर्तियों के नायक केशी का वृषभदेव के साथ संबंध हो जाने से जैनधर्म की प्राचीन परम्परा पर महत्वपूर्ण प्रकाश पड़ता है। यह केशी जैन परम्परा में प्रचलित रहा।

ऋग्वेद में वातरशना (दिगम्बर) मुनि के संबंध की ऋचायें (ऋग्वेद 10, 135, 2, 3) में आई हैं।

मनुयो वातरशना पिशंगा इत्यादि

स्वस्ति नः इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्व वेदसः।
स्वस्ति न स्ताक्ष्यों अरिष्ट नेमिः स्वस्ति नो वृहस्पति र्दधातुः॥

(ऋग्वेद 1, 89, 6) तीर्थंकर नेमिनाथ का समय ई.पूर्व 1000 के लगभग माना गया है। महाभारत में उनका नाम हरिवंश में आया है। यहाँ ऋग्वेद में भी है। यहाँ अरिष्ट नेमि का अर्थ हानिरहित नेमि वाला या शतपथ ब्राह्मण के अनुसार अहिंसा की धुरी है। वृहस्पति के समान इसमें अरिष्ट नेमि की स्तुति भी है। पार्श्वनाथ तीर्थंकर के बारे में डॉ. जेकोबी ने (इंडियन अन्टीक्वरी वाल्यूम 9 पेज 160) लिखा है कि बुद्ध के समय निर्ग्रंथ संप्रदाय कोई नवीन संप्रदाय नहीं था। यही मत पिटकों का भी जान पड़ता है।

भागवत में ऋषभदेव के जीवन वृत्त का वर्णन है-

अयह भगवान वृषभदेवःस्ववर्ष कर्मक्षेत्र मनुमन्यमानः।
प्रदर्शित गुरु कुलवासः लब्धवैर्गुरु भिरनुज्ञातो।
गृहमेधिना धर्मा ननुशिश माणैः रातं जनया भास।

(गीता प्रेस) 5/4/8

भागवानृषभ संज्ञ अग्नयतंत्र स्वयं नित्य निवृत्तानर्थ परम्परः केवला नंदानुभव ईश्वर एवं विपरीत वत्कर्माण्यारभमाणः इत्यादि

(वही 5/4/14)

भावार्थ- भगवान ऋषभदेव ने सर्व लौकिक क्रियाओं का संपादन किया। वे परम स्वतंत्र भौतिक आसक्ति से रहित आनंद स्वरूप साक्षात् ईश्वर थे। समता, शांति और करुणा के साथ धर्म, अर्थ, यश, संतानसुख, योग और मोक्ष का उपदेश देते हुए गृहस्थाश्रम में लोगों को नियमित जीवन व्यतीत करने का उपदेश दिया। ऋषभदेव समस्त धर्मों के सार रूप वेद के गुह्य-गुह्य रहस्य के ज्ञाता थे। वे सामदानादिरीति के अनुसार जनता का पालन करते थे। उन्होंने (ज्ञान-ध्यान और तप रूप आत्म यज्ञ-संज्ञक) सौ यज्ञों का संपादन किया था। उनके शासन काल में प्रजा सुखी थी, उसे किसी भी बात की कमी नहीं थी। ऋषभदेव ने अनेक देशों में विहार किया था तथा देश, राष्ट्र और समाज हित का उपदेश दिया था।

(तीर्थंकर महावीर और उनकी आचार्य परम्परा भाग 1 पृ. 9)

तीर्थंकर नमि 21 वें तीर्थंकर अनासक्ति योग के प्रतीक थे। नमि मिथिला के राजा थे। हिन्दू पुराणों में जनक राजा के पूर्वज के रूप में माने गये हैं। नमि तीर्थंकर ईस्वीसन से सहस्त्रों वर्ष पूर्व हुए हैं।

नमि की अनासक्ति का उदाहरण पालि महाजनक जातक का निम्न प्रकार है-

सुमुखं वत जीवाम येसंनो नत्थि किंचन।
मिथिलाये दहमानाय न मे किंचि अदह्यहथ॥
यह नमि दीक्षा के समय के पूर्व निर्मोह रहने का अभिप्राय है।

वैदिक काल याने ऋग्वेदादि रचना के बाद क्रमशः ब्राह्मण, आरण्यक और उपनिषद का काल आता है। यह ईसा पूर्व 800 शती के काल की परम्परा है।

डॉ. रमेशचंद्र दत्त बताते हैं कि जब आर्य लोग गंगा की घाटी में फैले, ऋग्वेदादि चार वेद संग्रहीत हुए, तभी ब्राह्मण ग्रंथों की रचना हुई जिनमें यज्ञ विधि लिखी गई। आरण्यकों याने वन में जाने की प्रथा में वन की विविध क्रियाओं (ज्ञान, ध्यान व तप) का वर्णन है। उपनिषद में आत्मा के निकट बैठना और उनका शिक्षण लेना। आरण्यकों में वर्णाश्रम धर्म का विकास दिखलाई देता है। उपनिषद दार्शनिक ग्रंथ है। उपनिषद वैदिक क्रियाकलापों के विरोध में है। उपनिष्दों में एक देवता ब्रह्म (आत्मा) बतलाया है। सब देवता उसी की शक्तियाँ हैं। मैत्रायणीय उपनिषद में ब्रह्मा, रुद्र, विष्णु आदि देवताओं को अविनाशी ब्रह्म का प्रथम रूप लिखा है। ब्रह्म के प्रभाव से अग्नि आदि देवता सब हतप्रभ बन जाते हैं। प्रजापति भी ब्रह्म का सेवक है।

प्राचीन काल में क्षत्रिय बौद्धिक जीवन से संबद्ध रहते आए हैं। इसका समर्थन उपनिषदों से होता है। शतपथ ब्राह्मण में विदेह राजा जनक अपने ज्ञान से ऋषियों को मुग्ध कर लेता है। उपनिषदों में अनेक बार कथन आता है कि (ती.ऋषभदेव के द्वारा बनाये गये क्षत्रिय, वेश्य और शूद्रवर्णों में से) क्षत्रियों के पास सर्वोच्य विद्या थी। छांदोग्य उपनिषद (5-3) में एक संवाद श्वेतकेतु और प्रवाहण का आया है। प्रवाहण ने पूछा कुमार! क्या तुम्हें मालूम है कि इस लोक से जाने पर प्रजा कहाँ जाती है? वह फिर इस लोक में फिर कैसे आती है? यह पितृलोक भरता क्यों नहीं है? श्वेतकेतु ने सभी प्रश्नों का उत्तर नहीं में दिया। इस प्रकार बहुत विस्तार से चर्चा है जिसमें समाधान नहीं हो पाया।

डॉ. दास गुप्ता ने- (हि.इ.फि.,जि. 1 पृ. 31) लिखा है कि उच्चज्ञान की प्राप्ति के लिए (भरत चक्रवर्ती के द्वारा स्थापित चतुर्थवर्ण वाले) ब्राह्मण क्षत्रियों के पास जाते थे। यह अनुमान करना शक्य है कि साधारणतया क्षत्रियों में गंभीर दार्शनिक अन्वेषण की प्रवृत्ति थी, जिसने उपनिषदों के सिद्धांतों के निर्माण में प्रमुख प्रभाव डाला इत्यादि।

श्री रमेश चन्द्र दत्त ने- भी (प्रा.भा.सं.इ.भा. 5 पृ.110-111) यही विचार प्रकट करते हुए लिखा है कि ''जबकि ब्राह्मण लोग क्रिया संस्कारों को बढ़ाये जाते थे तो विचारवान सच्चे लोग यह सोचते थे कि क्या धर्म केवल इन्हीं क्रिया संस्कारों और विधियों को सिखलाता है, उन्होंने आत्मा के उद्देश्य और ईश्वर के विषय में खोज की, वे नये तथा कृतोद्यम विचार ऐसे विरोचित पुष्ट और दृढ़ थे कि ब्राह्मण लोगों ने जो कि अपने को ही बुद्धिमान समझते थे, अंत को हार मानी और वे क्षत्रियों के पास उनको समझने के लिए आए। उपनिषदों में ये ही दृढ़ और पुष्ट विचार हैं।''

भारत की धार्मिक क्रांति के अध्ययन में जो विद्वान लोग अपना सारा ध्यान आर्य जाति की ओर ही लगा देते हैं और भारत के समस्त इतिहास में द्रविड़ों ने जो बड़ा भाग लिया है उसकी उपेक्षा कर देते हैं वे महत्व के तत्त्वों तक पहुँचने से रह जाते हैं।

(रि.लि.इ.पृ. 4-5)

लोकमान्य तिलक ने- भी गीता रहस्य में (पृ.344) में लिखा है कि जैमिनी ने वेदों का स्पष्ट मत बतलाया है कि गृहस्थाश्रम में रहने से ही मोक्ष मिलता है। (वेदांतसूत्र 3, 4, 17, 20) कर्मकांड के इस प्राचीन मार्ग को गौण मानने का आरंभ उपनिषदों में ही पहले पहल देखा जाता है। उपनिषदकाल में यह मत पहले पहल

अमल में आने लगा कि मोक्ष पाने के लिए इसके पश्चात् वैराग्य से कर्म सन्यास करना चाहिए। ज्ञानकांड और कर्मकांड में से किसी को गौण न कहकर भक्ति मार्ग के साथ इन दोनों का मेल कर देने के लिए गीता की प्रवृत्ति हुई है।

आत्मा पुर्नजन्म, सन्यास, तप और मुक्ति ये सारे तत्त्व परस्पर में संवद्ध हैं। आत्म विद्या का एक छोर पुर्नजन्म है तो दूसरा छोर मुक्ति है और सन्यास लेकर अरण्य में तप करना पुर्नजन्म से मुक्ति का उपाय है। ये सब तत्त्व वैदिकेतर संस्कृति से वैदिक संस्कृति में प्रविष्ट हुए हैं। तभी तो विद्वानों का कहना है कि "अवैदिक तत्त्वों का प्रभाव केवल देश में विचारों के विकास के लिए एक नये प्रकार के दृश्य से परिचय में ही लक्षित नहीं होता, किन्तु सत्य तक पहुँचने के उपायों के परिवर्तन में भी लक्षित होता है।

(हि.रि.ई.वे.पृ.32)

वेदात मेतं पुरुषं महांत मादित्य वर्ण तमसः परस्तात्।
तमेव विदित्वाऽतिमृत्यु मेति नान्यः पंथाः विद्यतेऽयनाय॥

(यजुर्वेद अ.31, मं.18)

त्वामामनंति मुनयः परमं पुमांस मदित्य वर्णममंल तमसः पुरस्तात्।
त्वामेव सम्यगुपलभ्य जयंति मृत्युं नान्यः शिवःशिवपदस्य मुनीन्द्र पंथाः॥

(आ.मानतुंग-भक्तामर स्तोत्र)

उक्त पद्यों की तुलना कीजिए। ये दोनों ऋषभदेव के विशेषण हैं। ऐसे ही और भी हैं।

श्रमण

सिकंदर के श्रमण समकालीन यूनानी लेखकों ने (इं.पा.पृ. 383) साधुओं को दो-दो श्रेणियों में विभाजित किया है। एक श्रमण और एक ब्राह्मण। अशोक के शिलालेखों में श्रमण और ब्राह्मण पृथक बतलाये हैं। श्वेताम्बर जैन आगमों में श्रमण के पांच प्रकार हैं। निर्ग्रंथ, शाक्य, तापस, गैरुक, आजीवक। जैनसाधु निर्ग्रंथ, बौद्ध शाक्य, जटाधारी वनवासी तापस, लाल वस्त्रधारी गैरुक, गौशालक के अनुयायी आजीवक बतलाये हैं।

(अमिधान राजेन्द्र कोश श्रमण)

महावीर और बुद्ध दोनों के अनुयायी साधु श्रमण कहे जाते थे। महावीर और बुद्ध भी दीक्षा के बाद महाश्रमण कहलाये। तैत्ति. आर. में भी वाक्य इस प्रकार है- वातरशना ह था ऋषभ श्रमणाः, उर्ध्वमंथिनो वभूवुः (2-7) वातरशन (नग्न) ऋषि श्रमण थे। ऊर्ध्व मंथिन याने ऊर्ध्व रेता अर्थात् पवित्र अर्थ सायण ने किया है। ऋग्वेद में (1, 131, 2) मुनियों के विशेषण रूप में वातरशना आया है। इसका अर्थ सर्वत्र नग्न किया गया है।

दिगम्बरत्व (मुनि)

ऋग्वेद में- मुनयों वातरशना पिशंगा वसते मला (मंडल 10-2-136, 2) वातरशना मुनयःदिगम्बर मुनि (साधु नहीं) पवन रूप करधनी को धारण करने वाले।

भागवत (पंचम स्कंध अ. 6, पाठ 20)- ऋषभ भगवान का जन्म वातरशना नानां श्रमणानां ऋषीणां धर्मान् दर्शायितुकामः मरुदेव्यां तनुवावतार- वातरशना को धारण करने वाले दिगम्बर मुनि धर्म को दिखाने के लिए, मरुदेवी के शरीर में हुआ। यहाँ वातरशना का पर्याय श्रमणशब्द है। यह श्री बेबर महाशय ने लिखा है।

महाभारत में श्री कृष्ण अर्जुन से कहते हैं–

अरोहस्वं रथे पार्थः! गांडीवं च करे कुरु।
निर्जिता मे दिनीमन्ये, निर्ग्रंथो यस्य सन्मुखे॥

हे अर्जुन रथ पर सवार हो जाओ, गांडीव धनुष को हाथ में पकड़ लो। जिसके सामने दिगम्बर मुनि है, समझ लो पृथ्वी को जीत लिया ऐसा मैं मानता हूँ।

एक प्रतिभाशाली जैन विद्वान ने 'मिलि आस करो सु अकव्वर की' इस समस्या की पूर्ति इस प्रकार की है–

जिय बहुतक भेष कियो जग में छवि भागई आज दिगंबर की।
चिंतामणि प्रगटयो हिय में तब कौन जरूरत अडम्बर की॥
जिन तारनतरन हि सेय लियो, परवाह करे को जब्बर की।
जिह आस नहीं परमेश्वर की मिलि आस कये सुअकव्वर की॥

भर्तृहरि ने दि.मुनि का निम्न प्रकार सुंदर चित्रण किया है–

पाणिः पात्रं पवित्रं श्रमण परिगतं भैक्ष्यमक्षय्यमन्नम्।
विस्तीर्णं वस्त्रमाशा दशक ममलं तल्पमत्यल्प मुर्वी॥
येषां निःसंगी करण परिणत स्वांत संतोषितास्ते।
धन्याः सन्यस्त दैन्य व्यतिकर निकरा कर्म निर्मूलयन्ति॥

अर्थ– युगल हस्तपुर में शुद्ध आहार लेनेवाले, दशदिशा रूप वस्त्र ग्रहण करने वाले, अल्पभूमि में एक करवट शयन करने वाले, परिग्रह रहित संतोष वृत्ति वाले, दैन्य भाव से सर्वथा रहित दिगम्बर मुनि ध्यान द्वारा कर्मों का क्षय करते हैं।

जैन दर्शन की प्राचीनता

प्रो. ह्यूसन ने उपनिषदों के चार भाग बताये हैं– प्रथम में वृहदारण्यक, छंदोग्य, तैंतीरीय, ऐतरेय और कौपीतकी ये पाँच। द्वितीय में कठक, ईश, श्वेताश्वर, मुंडक और महानारायण ये पाँच। तृतीय में प्रश्न, मैत्रायणी और मांडुक्य ये तीन। चतुर्थ में शेष।

डॉ. याकोवी बताते हैं– कि इनमें सांख्य के कतिपय मौलिक विचार पाये जाते हैं। योग दर्शन भी इसके साथ है।

इनमें आत्मा के अमरत्व का समर्थन नहीं है, से जो जड़ तत्त्व की उससे भिन्नता भी प्रदर्शित कर सके। ये दोनो सिद्धांत इनसे पूर्व जैन और सांख्ययोग सदृश प्राचीनतम दर्शनों में पाये जाते हैं।

वादरायण के ब्रह्म सूत्र वेदांत दर्शन के अंतर्गत है। ब्रह्मसूत्र में जीव को अनादि एवं नित्य माना है। कठ और श्वेताश्वर उपनिषदों में ब्रह्म से आत्माओं का पृथक अस्तित्व माना है, दोनों में ऐक्य का भी समर्थन है। जैन और सांख्य जड़ को भी स्थायी मानते हैं। सांख्य मतानुसार जड़ प्रकृति (प्रधान) जो नाना रूप होती है। जैनधर्म में पुद्गल नाना अवस्थाओं में परिवर्तित होता है। आकाश आदि पांच अजीव द्रव्य परिणामी नित्य हैं। इस प्रकार ये दो दर्शन प्राचीनतम हैं। शेष चार्वाक आदि अपने ढंग से विकसित हुए। चर्वाक (भूतवाद) अर्वाचीन है।

आत्मद्रव्य सांख्य मानता है परन्तु उसमें ज्ञान बिना चेतना मानता है वह उसके मत से नित्य है।

क्रमशः ......

नियत और अनियत

-आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज

मङ्गलाचरण

नमः श्रीवर्धमानाय, निर्धूतकलिलात्मने।
सालोकानां त्रिलोकानां, यद्विद्या दर्पणायते ।।

सद्धर्म बन्धुओं; संसार में रहने वाली आत्मायें किसी न किसी पुरुषार्थ में संलग्न हैं। किसी का पुरुषार्थ धर्म कमाने में है तो कोई अपने को मोक्षमार्ग पर चलाने में पुरुषार्थ करता है। कोई अपने लिए तरह-तरह के वैभव सम्पत्तियाँ आदि के निमित्त अपने कदम संसार की ओर बढ़ा रहा है। ऐसा हम सभी जगह देख रहे हैं। हमें ऐसे लोग बहुत कम मिलते हैं जो संसार से भयभीत होकर के मोक्षपथ की ओर अपने कदम बढ़ाते हैं। इस संसार में ऐसे बहुत कम जीव होते हैं जो अपने पुरुषार्थ से अपने कर्मों का क्षय, क्षयोपशम, उपशम करके मोक्षमार्ग को प्राप्त करते हैं। ऐसी वे आत्मायें भव्य आत्मायें हैं, और बहुत-सी जो आत्मायें अभी मोक्षमार्ग में नहीं आई हैं उनमें भी कई भव्य आत्मायें हैं। अनन्तानन्त सिद्ध परमेष्ठी हो गये और अभी भी ऐसे अनन्तान्त भव्य जीव हैं जो पुरुषार्थ के माध्यम से मोक्ष प्राप्त करेंगे। पुरुषार्थ के साथ कर्म कुछ नहीं करता ऐसा नहीं है। कर्म हर जगह जुड़ा हुआ है। दैव का सहारा हर जगह है। कर्म के माध्यम से ही हमारा पुरुषार्थ सम्पूर्णता को प्राप्त करता है। चाहे पुरुषार्थ से काम हुआ हो चाहे और भी किसी काल लब्धि से, सब कर्म की देन है। जिसके माध्यम से कार्य सम्पन्न होता है। कभी तो बिना यत्न किये कोई कार्य सम्पन्न हो जाता है सो हम बोलते हैं दैव कर्म प्रमुख है।

कर्म पुरुषार्थ के बल से हम अपने कर्म को प्रबल करते हैं। जो कर्म हमारा पतला है उसे हम गाढ़ा करते हैं। पुरुषार्थ के बल से जल्दी उदय में लाते हैं। इसमें पुरुषार्थ की प्रमुखता होती है लेकिन सभी आज तक पुरुषार्थ से ही हुआ है ऐसा नहीं है। कर्म तो उसके साथ लगा हुआ है। जो व्यक्ति केवल कर्म पर ही छोड़ देते हैं सब कुछ, कि कर्म जब जैसा होगा वैसा तब हो जायेगा, जो जिस काल में होना होगा वैसा ही वह उस तरह से घट जायेगा सो वह बिना पुरुषार्थ के निकम्मे बैठे रहते हैं। कर्म को आप देखते बैठेंगे आपको क्या मालूम कि वह कब उदय में आता है तो उसमें कोई प्रयोजन सिद्ध नहीं है, मोक्ष का प्रयोजन तो बिलकुल सिद्ध नहीं है। क्या कर्म की उदीरणा भी तो होती है। मोक्ष के प्रयोजन के लिए तो हमें अकाल में कर्म क्षय करना होगा तभी मुक्ति रूप प्रयोजन सिद्ध होगा इसमें पुरुषार्थ बहुत जरूरी है। आम पेड़ पर पकता है; ठीक है; मगर पेड़ से एक माह पहले तोड़ लिया और पाल में पका लिया तो यह पुरुषार्थ है। कर्म स्वयं समय से उदय में आयेंगे और उसके साथ नये कर्म भी बंधते चले जायेंगे। आप कोई पुरुषार्थ नहीं करेंगे तो उदीरणा द्वारा कर्म समय के पहले उदय में नहीं आयेगा तो मोक्ष पाने में कितना काल लगेगा? वे कर्म कब उदय में आयेंगे, कब फल देंगे? ऐसा तो हमारा ये संसार बढ़ता ही चला जायेगा। ऐसे कर्मों को उदय में लाकर पहले ही उदीरणा कराना और क्षय करना अविपाक निर्जरा है।

जब पुरुषार्थ के पहले ही कुछ कार्य होता है तो कर्म की प्रबलता मानी जाती है जैसे बिना कुछ किये धन आदिक मिलता चला जाता है। एक आत्मा जिसके घर में बहुत गरीबी थी और वह एक बार ज्यों ही अपने जीवन में अचानक ही एक वस्तु की प्राप्ति करती है और उसे लगता है कर्म कितना प्रबल है। सब सोचते हैं घर में

कितनी गरीबी है इसका कोई उपाय निकल आये। एक व्यक्ति अचानक ही जा रहा था, सोचा इसके हाथ में कुछ वस्तु है, चलो अपन खरीदें पूछा, भैया! कितने में आयेगी? ले ली, लकड़ी थी। लकड़ी में देखा, लकड़ी के अन्दर रत्न निकले। वो रत्न कैसे मिले? सोचने लगा, राजा के पास से आई हो लगता है पुरानी वस्तु होगी। रत्न मिल गये कितना लाभ हो गया अचानक ही, घर वालों का काम हो जायेगा इसे उन्हें दे दें और भाग्य की बात है परिवार वाले सुख में रहेंगे। बिना मांगे परिवार वालों को दे दिया और वह चल दिया। यात्रा के लिए, आगे जाकर के देखा एक व्यक्ति खेत में काम कर रहा है। उसको सहारा देकर के भैया तुम भोजन कर लो, मैं तुम्हारा काम कर दूँगा। और काम करने लगा और खेत में ही एक कोने में घड़ा निकल आया उसमें रत्न मिले। बहुत आनंद हुआ कि ये रत्न कहाँ से आये? यह तो किसी विशेष पुण्य उदय से मिला है। कोई सेठ थे उन्होंने कभी भविष्य के लिए गाड़ रखी थी? सो मिल गई और आगे जाकर राजदरबार में बहुत अच्छी वीणा थी, सुन्दर वीणा थी, और राजा के मन में आया कि जो सुन्दर ढंग से वीणा बजायेगा उसे यह राज्य मिलेगा, साथ मेरी कन्या भी दी जायेगी। वीणा मुझे चाहिए, विचार किया बड़े सुन्दर ढंग से वीणा बजाई, तो वीणा भी मिल गई और कन्या भी मिल गई, और उसे राज्य का कार्यभार भी सौंप दिया।

आपको यह समझना था कि दैव, जिसको भाग्य बोलते हैं, जब प्रमुख होता है तो बिना पुरुषार्थ के सब कुछ मिलता चला जाता और देखो ये राज्य अनायास ही उसे मिल गया वह सोचता है कि यह हमारा कितना तीव्र पुण्य है चलो यहीं पर अपने परिवार वालों को भी बुला लो और बुलाकर सबको सुख समृद्ध कर दिया।

आप जानते हैंकि यह धन्यकुमार की कथा है। यह दैव की प्रमुखता का उदाहरण है। जिनकी वजह से सारा परिवार धन्य हो गया और राजा भी उनको पाकर के अति धन्य हो गया ऐसी आत्मा से सबक लें कि पूर्व जन्मों में किये गये कर्मों का फल हम लोग इस जन्म में पाते हैं। और अनायास ही हमें मिल जाता है तो ऐसा दैव कहा जाता है और हम दैव को देखते बैठे कुछ कर्त्तव्य न करें तो फिर उसे निकम्मा बोला जाता है। अत: सबका सार यही है कि पुरुषार्थ हीन कभी नहीं बनना चाहिए। पुरुषार्थ को हमेशा याद रखना चाहिए क्योंकि हम जानते ही हैं कि इस जगत में जो-जो द्रव्य हैं उन सभी का ज्ञान हमारे केवली भगवान को है। वे जानते हैं उनके सभी पर्यायों को और गुणों को लेकिन इस बात का ध्यान रहे कि जो पर्यायें अभी घटित नहीं हुई हैं। जो पर्यायें भविष्य सम्बन्धी पर्यायें हैं उनके बारे में हम यह कह सकते हैं कि वे अनियत भी होती हैं नियत भी होती हैं। इसलिए ऐसा चिंतन करें कि जो नियत पर्यायें हैं उनमें कोई परिवर्तन होना शक्य नहीं है; लेकिन अनियत में पुरुषार्थ के द्वारा परिवर्तन संभव है।

कह दिया था कि इतने वर्ष के बाद द्वारिका भस्म हो जाएगी। ये नेमिनाथ भगवान की दिव्य ध्वनि में आ गया। तो नियत पर्याय में कुछ ऐसा ही होता है, कुछ पर्यायों के ऐसे प्रभाव होते हैं या उनके माध्यम से ऐसा घटित होता है इस माध्यम से ही उन आत्माओं को निकाचित उस कर्म का फल मिलने वाला है। उसमें पुरुषार्थ कुछ नही कर सकता। लेकिन सभी पर्यायें नियत ही होती हैं ऐसा नहीं है कुछ पर्यायें अनयित भी होती हैं लेकिन पहले नियत के बारे में कह दूँ कि वहाँ लोगों ने सोचा कि क्या ऐसा हो सकता है कि उन सब लोगों का ऐसा कर्म हो? या जिनका कर्म होगा वे वहाँ पर रहेंगे और वैसा घट जायेगा। जब लोगों ने सोचा कि 12 वर्ष हो गये हैं अब क्या होगा। लेकिन जो होना था वो हुआ, जिनके साथ होना था वह अवश्य ही हुआ।

अनियत जो पर्यायें होती हैं उनमें पुरुषार्थ भी अपना काम करता है। आप यह जानते हैं कि जब आदि प्रभु तेरासी लाख पूर्व वर्ष होने के बाद भी वैरागी नहीं हुये तब वह सौधर्म इन्द्र चिन्तातुर हो गया, कि हमारे प्रभु को अभी तक वैराग्य क्यों नही हो रहा है? इस चिंता से वह आतुर है। बहुत सारी जनता का कल्याण होना है वह कैसे होगा। हमें कुछ तो उपाय करना चाहिए। इसलिए वह एक ऐसी नृत्यकारिणी को सामने लाता है जिसकी आयु अल्प थी, बहुत कम थी और जब वह राज्य सभा में नृत्य कर रही थी तो नृत्य-नृत्य करते-करते ही उसकी आयु समाप्त हो गई और वह नीचे गिर गई। बस यह दृश्य देखते ही आदिप्रभु के मन में वैराग्य का चिंतन प्रारम्भ हो जाता है। एक निमित्त सामने आया था तो काम हो गया। इसलिए उसने सोचा था कि एक निमित्त सामने ले जाकर देखें इसमें कुछ होता है कि नहीं, नहीं तो दूसरी बात सोचेंगे। उस निमित्त ने अपना असर किया और जग की असारता के बारे में चिंतन प्रारम्भ हो गया, सबका ऐसा ही मरण होना है वैराग्य हो गया मैं क्या कर रहा हूँ, क्या करना था, किसलिए आया था? चिंतन प्रारम्भ हुआ और वैरागी बनकर के निकल गये जंगल की ओर। आप जानते हैं कि आदिनाथ प्रभु का दीक्षा कल्याणक हुआ और बाद में तपस्या में लीन हो गये। ये क्या है? पुरुषार्थ। कुछ बातें अनियत भी होती हैं। उनके बारे में पुरुषार्थ करना चाहिए। अगर इन्द्र ऐसा पुरुषार्थ न करता, तो फिर क्या होता चिन्ता का विषय हो जाता।

एक जगह और देख लो, छयासठ दिन तक दिव्य ध्वनि नहीं खिरी केवलज्ञान होने के बाद; चिन्ता हो गई। भव्य जीवों का क्या होगा। समवशरण की रचना हो गई और दिव्यध्वनि नहीं खिरती। अगर खिरना निश्चित होता और कब खिरेगी ऐसा निश्चित होता तो इन्द्र को यह पुरुषार्थ करने की आवश्यकता नहीं होती; कि वह वहाँ जाये जहाँ वह गौतम गोत्र वाला इन्द्रभूति गौतम, ज्ञानमद का पोषक 500 शिष्यों के साथ बैठा है। कहता है- कौन है मुझ सम ज्ञानी। मुझे सर्व वेद-शास्त्रों का ज्ञान है, मुझे शास्त्रार्थ में कौन परास्त कर सकता है? कोई नहीं, ऐसा मद को धारण करके बैठा था। इन्द्र ने ब्राह्मण के रूप में वहाँ उसके सामने जाकर प्रश्न किये कि सप्त तत्त्व कौन-से हैं? षट् द्रव्य क्या हैं? नौ पदार्थ किनको बोलते हैं? पंचास्तिकाय क्या हैं? जब उस गौतम ने सुना तो उसे लगा पहली बार सुन रहा हूँ ऐसे शब्द; सोच विचार करने लगा उत्तर नहीं दे पाया और उलटा इन्द्र को पूछा कि ऐसा जानने वाला कोई है क्या पृथ्वी पर? बोले हाँ। कौन है? महावीर! महावीर कौन है? चलो दिखाता हूँ। और रास्ते चल दिया। जाते-जाते मार्ग में मन्द-मन्द सुगंधित वायु बह रही है, चारों ओर वृष्टि हो रही है, दुन्दुभी वाद्य बज रहे हैं सर्व ऋतुओं फल-फूल युगपत् आ गये थे। यह सब देखकर के मालूम पड़ गया कि कोई महान आत्मा है पास में; आते ही ज्यों समवशरण में प्रवेश किया तो महान वीतराग प्रभु के दर्शन हो गये। सामने देखा तो विशाल मानस्तम्भ दिखा जिसमें वीतराग भगवान की प्रतिमाएँ देखते ही उसका मान चूर-चूर हो गया। मिथ्यात्त्व के टुकड़े-टुकड़े हो गये। साष्टांग नमस्कार किया। समवसरण में जाने के लिए सम्यग्दर्शन रूपी टिकट मिल गयी। क्योंकि समवशरण में अन्दर की ओर जो प्रवेश मिला वह बिना सम्यग्दर्शन के नहीं हो सकता था। मानस्तम्भ देखने के बाद भी अगर सम्यग्दर्शन प्राप्त न हो तो फिर तो मुश्किल है। ध्यान रखना पुरुषार्थ की जरूरत है। समवशरण में प्रवेश किया। अन्दर जाकर प्रभु का दर्शन किया। तीन प्रदक्षिणायें दीं नमस्कार किया। नमस्कार करते ही वैराग्य उत्पन्न हो गया। ये ही सच्चे भगवान, सच्चे गुण हैं दूसरा और नहीं इस जगत में कोई। आत्मा का कल्याण करने वाला यही सच्चा धर्म है। मुझे तुरन्त इसकी शरण में जाना चाहिए। दीक्षा लेने का भाव

हुआ और दीक्षा भी ले ली। और मति, श्रुत, अवधि और मन:पर्यय इन चार ज्ञान के धारी हो गये। यह दिन गुरु पूर्णिमा और दूसरे दिन से दिव्य ध्वनि प्रारम्भ हो जाती है जो वीर शासन जयन्ती नाम से मनाई जाने लग जाती है। जैसे सिंहनी का दूध स्वर्णपात्र में ही ठहर पाता है, वैसे ही प्रभु की वाणी को झेलने के लिए पात्र चाहिए था। पात्र के बिना दिव्य ध्वनि नहीं खिरी और अब दिव्यध्वनि खिरी गणधर परमेष्ठी ने सबको अर्थ बतलाया उन्होंने दिव्यध्वनि को झेलकर ग्रन्थ की रचना की। इसप्रकार वे इन्द्रभूति गौतम प्रधान गणधर बन गये। इस प्रकार यहाँ पुरुषार्थ की मुख्यता देखो।

ऐसा पुरुषार्थ किया इन्द्र ने, तब काम हो पाया, नहीं तो और कितने दिन निकल सकते थे इसलिए कई लोग विचार करके बैठे रहते हैं कि जिस काल में जो होना होगा वैसा होगा। काल लब्धि आयेगी तब होगा। ऐसे शब्द जो कहते हैँ उन्हें इतना चिंतन करते रहना चाहिए कि कुछ पर्यायें अनियत भी होती हैं। उनके अनियत पर्यायों को हम लोग कभी भी नहीं जान सकते कि किस रूप में घटने वाली हैं आगे। केवली भगवान एक-एक पदार्थ को युगपत जानते हैं यही तो अनेकान्त है। तो हमें ये विचार करना चाहिए कि कुछ पर्यायें जो अनियत हैं उनके बारे में हमें भी ऐसा विचार करना है जो जब जैसा होना है सो होगा।

''जो-जो देखी वीतराग ने सो-सो होसी वीरा रे!'' ऐसा कोई जो बोलते हैं तो ये पक्तियाँ किसी विद्वान के द्वारा बनाई गई हैं। आर्ष परम्परा के कोई निर्ग्रन्थ आचार्य द्वारा नहीं। नियत पर्यायों की अपेक्षा भले ही घटित हो जाये लेकिन अनियत की अपेक्षा से घटित नहीं होती है। ध्यान रखना इसमें कुछ सुधार की भी आवश्यकता है। आप लोग इस विषय को कुछ गहराई से और समझें मैं एक और उदाहरण रख रहा हूँ जिससे सरल रीति से आप समझ जायेंगे।

भगवान महावीर का समवशरण लगा हुआ है और दिव्यध्वनि सुनने के लिए कई भव्य आत्मायें जाती हैं और एक श्रावक श्रेष्ठी भी जा रहे थे। उन्होंने जाते समय जंगल के रास्ते में एक मुनिराज को देखा वे शिला पर बैठे थे चूंकि आसन तो हमारे जिन भगवान जैसा ही था। जिन आसन में विराजमान हाथ पर हाथ रखे बैठे हुए थे फिर भी मुख मुद्रा म्लान थी, विकृत मुद्रा थी। जैसी नहीं होनी चाहिए वैसी थी। उस मुद्रा को देख करके उनके मन में पीड़ा हुई। क्या बात है मुनि महाराज की ऐसी मुद्रा नहीं होना चाहिए। कुछ तो भी जरूर घट रहा है जो इनके कष्ट का कारण है अथवा कोई न कोई विशेष बात होना चाहिए। बिना किसी कारण के ऐसी मुद्रा नहीं हो सकती इसलिए उन्होंने समवशरण में पहुँचते ही गणधर परमेष्ठी से प्रश्न किया कि हे प्रभु! हमने समवशरण में आते समय रास्ते में एक मुनि महाराज को देखा उनकी मुद्रा विकृत थी जो कि वैसी नहीं होनी चाहिए। प्रभु क्या कारण है? बता दीजिए। आप लोग अनियत के विषय पर समझ रहे हैं, उन्होंने कहा- वे मुनि महाराज नरक में भी जा सकते हैं और वे ही मुनि महाराज केवलज्ञान की प्राप्ति भी कर सकते। श्रावक श्रेष्ठी ने कहा- प्रभु कैसे? प्रभु गणधर परमेष्ठी ने बताया- क्योंकि वे तो अवधिज्ञानी मन:पर्यय ज्ञानी थे ही उन्होंने कहा कि वे मुनिराज आहार चर्या को गये थे वहाँ चर्चा चल रही थी कि देखो ये महाराज अपने एक छोटे से बेटे को राज्य देकर के मुनि बन गये और मंत्री (शत्रु)लोगों ने उस बेटे को बांधकर कारागृह में डाल दिया और राज्य को बांटने की तैयारी चल रही है और सब मंत्री उस राज वैभव को अपना-अपना बना लेंगे। यह सुनते मुनिराज ने सोचा कि मेरे कारण सब जीवों को इतना कष्ट, अब आहार कैसे करें? आ गये सीधे-सीधे आकर के उपवास लेकर के

बैठ गये। मन को बहुत सम्हाल रहे थे ऐसा विचार न आये लेकिन किसी-किसी का कर्म उदय ऐसा रहता है। सबको नहीं रहता देखो आप सोचें बीच में ही उदाहरण याद आ रहे हैं कि पांच पाण्डव में से तीन को कोई विकल्प नहीं आया, मेरे भाई का नहीं; अन्य मुनि महाराज का कि क्या हो रहा होगा? दो को मात्र चिंतन आया मेरे बाजू वाले मुनिराजों का क्या हो रहा होगा? दूसरे का विकल्प आया प्रशस्त राग हो गया तो मोक्ष नहीं पहुँच पाये। बल्कि साधिक (कुछ अधिक) तैंतीस सागरोपम तक मोक्ष नहीं मिलेगा। लटक गये उतने काल के लिए उसके बाद आयेंगे, मनुष्य बन मुनि बनेंगे फिर मोक्ष जायेंगे। पर की चिन्ता की; चाहे मुनिराज की चिन्ता की तो भी लटक गये। पर की चिन्ता नहीं करना चाहिए। अहं आत्मा में लीन होना चाहिए। सोहं भी नहीं चलेगा। पहले उदासोहं, फिर दासोहं, फिर सोहं फिर अहं रूप एक में लीन होना कि बस मैं एक ही हूँ। मेरा दूसरा कोई नहीं, आत्मा एक ही है मेरा बस। जैसे समयसार में कहा है कि-

अहमिक्को खलु सुद्धो, दसंण णाणमइयो सदारूवी।
णवि अत्थि मज्झ किंचिवि, अण्णं परमाणु मित्तंपि॥

मैं एक हूँ, निश्चय से शुद्ध हूँ और ज्ञान दर्शन मय सदा अरूपी हूँ, अन्य परमाणु मात्र भी मेरा कुछ भी नहीं है। ऐसा तीनों ने चिंतन कर लिया तो उन्हें मोक्ष हो गया। अपनी आत्मा को छोड़कर किसी का भी चिंतन नहीं आना चाहिए। कोई विकल्प नहीं आना चाहिए। जैसा कि कहा ही है:-

जहाँ देह अपनी नहीं, तहाँ न अपना कोय।
घर सम्पत्ति पर प्रगट हैं, पर हैं परिजन लोय॥

तो वहाँ पर ऐसे विचार करने से 33 सागरोपम तक रुकना हो गया। वैसे ही वहाँ उन विकृत मुद्रा वाले मुनिराज का चिंतन चल रहा था कि मेरे द्वारा छोड़े गये परिवार कुटुम्बियों को कष्ट हो रहा है। मंत्रियों ने ऐसा क्यों किया? ऐसा धोखा क्यों दिया? ऐसा छल क्यों किया? मन में ऐसा विकल्प चल रहा था लगता है कि परिग्रहानन्दी नाम के रौद्रध्यान में लीन हो गये थे वे महाराज तत्त्वार्थ सूत्र में कहा ही है कि-

''बह्वारम्भ परिग्रहत्वं नारकस्यायुषः'' बहुत आरम्भ व परिग्रह नरकायु का कारण है। गणधर परमेष्ठी ने भी यही कहा कि श्रावक श्रेष्ठी सुनो! कि तुम्हें उन्हें सम्बोधन करना होगा; तब राजा श्रेणिक ने कहा कि मैं मुनिराज को श्रावक होकर समझाऊँ? हाँ; तुमने नहीं समझाया तो नरक निश्चित है। और अगर सम्बोधन दिया तो वे केवलज्ञान को प्राप्त करेंगे। बन्धुओं! ये है अनियत पर्याय का उदाहरण। इसी तरह दूसरे उदाहरण भी हैं कि मानो बेटा दौड़ करके जा रहा है रेल की पटरी के पास, अगर सब कुछ नियत है तो आप न रोकते; फिर क्यों रोकती है माँ कि बचाओ-बचाओ, पकड़ो-पकड़ो नहीं तो चला जायेगा, मर जायेगा। क्योंकि कुछ पर्यायें अनियत भी होती हैं। यह आपकी क्रिया से अवश्य मालूम पड़ रहा है। लेकिन कुछ लोग बोलने में तो एकान्त मिथ्यादृष्टि बन गये हैं। सब को नियत बना दिया, सब नियत है तो आप पुरुषार्थ मत करो। पुरुषार्थ का तो निषेध करते हैं फिर भी पुरुषार्थ करते हैं। कोई बच्चा बीमार हो जाता है तो चलो डॉक्टर के पास चलते हैं अगर नियत हो तो पड़ा रहने दो। तो नहीं; पुरुषार्थ करना पड़ेगा, नहीं किया तो प्राण निकल सकते हैं अतः दयावान भागते हैं डॉक्टर के पास। जो धर्मात्मा होते हैं वे इस बात को समझते हैं कि कुछ पर्यायें अनियत भी होती हैं, यह मानकर पुरुषार्थ करना ही पड़ेगा।

क्रमशः.....

गुरु का पद विहार बनी सुख की बहार

अध्यात्म योगी, वात्सल्य मूर्ति परम पूज्य आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी महाराज ससंघ पवई नगर के प्रवास के दौरान 25 मार्च को श्री पार्श्वनाथ महामण्डल विधान का आयोजन किया गया। जिसमें सौधर्मइन्द्र बनने का सौभाग्य श्री महेन्द्रकुमार जैन सपरिवार को प्राप्त हुआ। विधान के बीच में आचार्यश्री आर्जवसागरजी के मंगल प्रवचन हुये जिसमें मन्दिर एवं प्रतिमा सुरक्षा के बारे में बताया और तुरन्त ही गुरु के आशीर्वाद से मन्दिर की सुरक्षा हेतु बाहर लाल पत्थर की शिलायें लगाने हेतु सबने दान घोषित किया और दो नयी वेदियाँ बनाने हेतु और उसमें विराजमान होने वाली जिन प्रतिमाओं के दान दाता भी तैयार हुये। जिस कारण सभी का मन अति प्रफुल्लित हुआ। कुछ दिन के प्रवास के उपरान्त गुरुवर का विहार 1 अप्रैल को कुंवरपुर की ओर हुआ। कुंवरपुर में जिनदर्शन एवं आहारचर्या हुई। दूसरे दिन प्रात: विहार करके मोहेन्द्रा, सागुवारा होते हुए हरदुआ पहुँचे। वहाँ पर ऐ. विनम्रसागरजी महाराज आचार्य गुरुवर की आगवानी हेतु आये बाजे एवं समाज की जय जयकारों के साथ मंगल प्रवेश हुआ। वहाँ दो दिन का प्रवास रहा। जिसमें आचार्यश्री के मंगल प्रवचन हुये। प्रवचन में गुरुवर ने संत निवास बनाने हेतु लोगों को प्रेरित किया। पश्चात् कोटा, बर्रड़, घाट पिपरिया होते हुये बांदकपुर में बाजे के साथ भव्य मंगल प्रवेश हुआ। दो-तीन दिन प्रवास के दौरान प्रवचन आदि के माध्यम से लोगों ने अच्छा धर्म लाभ लिया। पश्चात् दमोह सिविल वार्ड में प्रवचन एवं विजयनगर में आहारचर्या कर ओजश्वनी कॉलेज में रात्रि विश्राम किया तथा प्रात: बांसा तारखेड़ा पहुँचे, प्रवचन और अहार चर्या कर बांसा से विहार करके बीच गाँव में गढ़ाकोटा के बड़े मन्दिर की कमेटी द्वारा महावीर जयन्ती के निवेदन पर गढ़ाकोटा में 15 अप्रैल को बाजे के साथ मंगल प्रवेश हुआ।

गुरुवर के मंगल प्रवचन के दौरान महावीर जयन्ती का एवं गुरुवर के 32वाँ दीक्षा दिवस कार्यक्रम आचार्य गुरुवर के मंगल सान्निध्य में मनाने हेतु श्रीफल भेंट किये गये। चौधरी मन्दिर के लोगों ने भी श्रीफल भेंटकर निवेदन किया 17 अप्रैल को दोपहर में तीन बजे से महावीर जयन्ती का कार्यक्रम पाठशाला के बच्चों के मंगलाचरण द्वारा प्रारम्भ हुआ गुरुवर के पादप्रक्षालन का सौभाग्य श्री प्रवीणकुमार जैन महावीर रोड लाइन्स दमोह वालों को प्राप्त हुआ और संगीतमय भक्तिभाव से गुरुवर की पूजन सम्पन्न की गयी। पश्चात् बाहर से पधारे दमोह, सागर आदि से पधारे अतिथियों को सम्मानित किया गया और शास्त्र भेंट का सौभाग्य श्री राजेश जैन फुटेरा दमोह वालों को और गढ़ाकोटा की महिला मण्डल को प्राप्त हुआ। पश्चात् गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये और तुरन्त ही विशाल जुलूस बैंड बाजे के साथ श्री जी शोभायात्रा महोत्सव चौधरी मन्दिर से निकलकर पटेरिया अतिशयक्षेत्र तक पहुँची। इसमें आचार्य गुरुवर का मंगल सान्निध्य सबको प्राप्त हुआ और पटेरियाजी में श्रीजी का अभिषेक सम्पन्न हुआ। इसी बीच गुरुवर के मंगल देशना भी जनता को प्राप्त हुई। पश्चात् बड़े मन्दिर में पुन: गुरुवर का आगमन हुआ और तीन-चार दिन का प्रवास रहा। बड़े मन्दिर कमेटी द्वारा ग्रीष्मकालीन प्रवास हेतु निवेदन होने पर भी गुरुवर का मंगल विहार 20 अप्रैल प्रात:काल हरदी गाँव की ओर हो गया। जिनदर्शन व आहारचर्या सम्पन्न हुई और समाज वालों ने कुछ दिन प्रवास हेतु निवेदन किया तो भी गुरुवर का मंगल विहार जूना, पटना बुजुर्ग की ओर हो गया। यहाँ पर भी ठहरने हेतु निवेदन किया। परन्तु गुरुवर ससंघ

कड़ता, बरौदा होते हुए ढाना पहुँच गये। वहाँ दोनों मन्दिरों का दर्शन, मंगलप्रवचन, आहार चर्या सम्पन्न हुयी। वहाँ से बह्मोरी में रात्रि विश्राम रहा ओर 24 अप्रैल को प्रात: काल गोपालगंज सागर में मंगलप्रवेश हुआ। करीब सात दिन के प्रवास में आध्यात्मिक प्रवचन, आगमिक चर्या, भजन, स्तोत्र पाठ द्वारा धर्म की अपूर्व प्रभावना हुई। भक्तों ने ग्रीष्मकालीन प्रवास हेतु निवेदन किया और यहीं पर वर्धमान कॉलोनी के कमेटी वालों ने अक्षय तृतिया पर्व अपनी कॉलोनी में मनाने हेतु गुरुवर का भी सान्निध्य प्राप्त हो इस भावना से श्रीफल भेंटकर विशेष आग्रह किया उनके इस आग्रह पर गुरुवर का गमन 2 मई को वर्धमान कालोनी में दिव्यघोष एवं जय जयकारों की मंगल ध्वनि के साथ गुरुवर का भव्य मंगल प्रवेश हुआ।

7 मई को प्रात: अभिषेक व गुरु के मुखारबिन्द से शान्तिधारा सम्पन्न हुई। पश्चात् भक्तामर विधान सम्पन्न हुआ। इसी बीच गुरुवर की मंगल अमृतमय वाणी सब को प्राप्त हुई इसके पूर्व नगर विधायक श्री शैलेन्द्र जी जैन व कमेटी तथा भाव-विज्ञान के परिवार द्वारा भाव-विज्ञान नये अंक का विमोचन हुआ और श्री विद्यासागर पाठशाला के कलश स्थापना हेतु कलश स्थापनकर्ता का चयन किया गया। दोपहर में बच्चों के मंगलाचरण व सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न हुये। पश्चात् गुरुवर के संस्कार से संस्कृति की बचाव पर मंगल उद्बोधन हुआ। तदुपरान्त पाठशाला मंगल कलश की स्थापना सम्पन्न हुई और काकागंज मन्दिर की कमेटी के लोगों ने स्वर्ण से सुसज्जित नई वेदी पर प्रतिमाएँ विराजमान करने के लिए गुरुवर के मंगल सान्निध्य प्राप्ति हेतु आचार्य गुरुवर के चरणों में श्रीफल भेंटकर निवेदन किया। वर्धमान कालोनी में श्री पार्श्वनाथ भगवान की वेदी नाभि के नीचे थी। गुरुवर की प्रेरणा से वेदी को ऊपर उठाने हेतु प्रतिमाओं को भ.पुष्पदन्त की वेदी में विराजमान किया गया।

16, 17, 18 मई को सागर के प्राचीन मन्दिर काकागंज में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ। जिसमें श्रावकगणों ने सौधर्म इन्द्रादि पद धारण करके इन्द्र-इन्द्राणि के रूप में प्रभु की भक्ति की। 16 तारीख को आचार्य गुरुवर का मंगल आगमन व ध्वजारोहण के पश्चात् अभिषेक व गुरु के मुखारबिन्द से शान्तिधारा सम्पन्न हुई। तदुपरान्त आचार्यश्री के मंगलप्रवचन हुये तथा शाम को महाआरती सम्पन्न हुई। ता.17 को अभिषेक शान्तिधारा के उपरान्त गुरुवर के मंगलप्रवचन हुये। तदुपरान्त यागमण्डल विधान सम्पन्न हुआ। 18 मई को प्रात: 7:00 बजे स्वर्ण से सुसज्जित नई वेदी पर नई प्रतिमाएँ विराजमान हुईं। रजत चौबीसी की प्रतिमाएँ भी विराजमान हुईं। पश्चात् शान्तिधारा एवं आचार्यश्री ने मंगल प्रवचनों के दौरान जैन धर्म की रक्षा एवं जिनप्रतिमाएँ की सुरक्षा के बारे में प्रकाश डाला। उससे एक ओर नई वेदी के निर्माणकर्त्ता तैयार हो गये।

वर्धमान कालोनी में 21 मई से 30 मई तक सर्वोदय सम्यग्ज्ञान व सम्यक्ध्यान प्रशिक्षण शिविर का आयोजन सम्पन्न हुआ। जिसमें 21 तारीख को प्रात: ध्वजारोहण व बच्चों के मंगलाचरण से शिविर का प्रारम्भ हुआ तथा कलश स्थापना भी की गयी। तदुपरान्त शिविरार्थियों को पुस्तकें व किट प्रदान की गयी तथा आचार्यश्री के मंगलप्रवचन हुये। शिविर में प्रतिदिन बच्चों एवं बड़ों के लिए भाग-1, भाग-2, भक्तामर स्तोत्र, जीवन-संस्कार, छहढाला, रत्नकरण्डक श्रावकाचार, द्रव्यसंग्रह, जैनागम संस्कार, सम्यक्ध्यान शतक आदि शास्त्र पढ़ाये गये। इसी बीच चकराघाट मन्दिर, सागर वालों की कमेटी ने आकर वेदी शिलान्यास हेतु

आचार्यश्री के मंगल सान्निध्य प्राप्त हेतु श्रीफल भेंट किये। 24 तारीख आचार्य गुरुवर के मंगल प्रवचन हुये। पश्चात् चन्द्रप्रभु भगवान् की वेदी हेतु शिलान्यास का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। 27 तारीख को वर्धमान कॉलोनी में होने वाले वेदी प्रतिष्ठा हेतु पात्र चयन का कार्यक्रम व श्री सम्मेद शिखरजी विधान सम्पन्न हुआ। जिसमें पूरे सम्मेदशिखरजी की रचना पूर्वक इन्द्र, इन्द्राणी बन करके बड़े ही हर्षोल्लास के साथ प्रभु की भक्ति की गयी। 30 तारीख को सभी शिविरार्थियों की परीक्षायें सम्पन्न हुयीं। इसी बीच में श्री शान्ति निकेतन उदासीन आश्रम से पूरे कमेटी के लोगों ने आचार्य गुरुवर के सान्निध्य में श्री 1008 शान्तिनाथ भगवान् के त्रयकल्याणक दिवस को दो दिन के रूप में मनाने हेतु श्रीफल भेंटकर निवेदन किया।

पश्चात् 1 जून को बाजे के साथ उदासीन आश्रम में गुरुवर ससंघ का मंगल आगमन हुआ और अभिषेक शान्तिधारा सम्पन्न हुई तदुपरान्त आचार्यश्री के मंगलप्रवचन बाहर बने पण्डाल में सम्पन्न हुये, श्री शान्तिनाथ महामण्डल विधान हुआ। 2 तारीख को श्री 1008 शान्तिनाथ का महामस्तकाभिषेक व महाशान्तिधारा सम्पन्न हुई तथा आचार्यश्री के मंगलप्रवचन शान्तिनाथ भगवान् के जीवन चरित्र पर सम्पन्न हुए।

तदुपरान्त शान्तिनाथ भगवान त्रयकल्याणक के उपलक्ष में निर्वाणकाण्ड पूर्वक निर्वाणलाडू चढ़ाया गया। तत्पश्चात् वहीं से आहारचर्या सम्पन्न हुयी। 3 तारीख को आचार्य गुरुवर आर्जवसागरजी ससंघ केन्द्रीय जेल (सागर) (ब्र.रेखा जैन के निवेदन से) पहुँचे। और वहाँ पर स्थित कैदियों के लिए आचार्यश्री ने व्यसन मुक्ति पूर्वक शाकाहारी होने का संकल्प देते हुए मंगल उद्बोधन दिया।

4, 5, 6 जून 2019 को वर्धमान कॉलोनी में वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव व पंचकल्याणक (याग मण्डल) विधान सम्पन्न हुआ। जिसमें 4 तारीख को ध्वजारोहण व अभिषेक शान्तिधारा, आचार्यश्री के मंगलप्रवचन और इन्द्रप्रतिष्ठा आदि कार्यक्रम हुये तथा 5 तारीख को यागमण्डल विधान सम्पन्न हुये। जिसमें श्रावकगण इन्द्र-इन्द्राणी बनकर पंचकल्याणक के समान अपूर्व आनन्द भक्ति भाव पूर्वक प्रभु की अर्चना की। और 6 तारीख को करीब सात बजे भ.श्री पार्श्वनाथ पुनः ऊँची की गई उसी वेदी पर विराजमान हो गये। शेष प्रतिमाएँ भी विराजमान की गयी तथा आचार्यश्री के मंगलप्रवचन हुये। जिसमें उन्होंने बताया कि जैसे प्रभु को तुमने उच्चासन पर बिठाया वैसे ही अब यहाँ की समाज भी उन्नति की ओर जावेगी, वर्धमान नगर बढ़ता ही जाएगा। समाज के लोगों ने यहीं पर चातुर्मास भी सम्पन्न हो ऐसी भावना व्यक्त की। तथा दोपहर में सभी शिविरार्थियों को व परीक्षा में उत्तीर्ण हुए शिविरार्थियों को (प्रमाणपत्र देकर) पुरस्कारित किया गया। परन्तु मोराजी के कमेटी के निवेदन से गुरुवर का गमन 7 तारीख को प्रातः कालीन बेला में मोराजी की ओर हुआ। वहाँ पर श्रुतपञ्चमी पर्व का मंगल कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। षट्खण्डागम रूप चारों अनुयोगों से सहित आगम शास्त्रों की पूजन की गयी। आचार्य गुरुवर के पादप्रक्षालन, पूजन एवं शास्त्र भेंट किये गये। तदुपरान्त आचार्य गुरुवर की मंगल देशना सम्पन्न हुयी। जिसमें श्रुतपञ्चमी की कथा सुनकर लोगों को आगम की महिमा का अवलोकन कराया गया। मोराजी में 4, 5 दिन का प्रवास रहा। पंचकल्याणक व वर्षायोग हेतु निवेदन भी किया गया था।

तदुपरान्त आचार्यश्री का ससंघ विहार 13 तारीख को प्रातःकाल आदर्श रेसीडेन्सी की ओर हुआ। बीच में शीतल हथकरघा वालों के निवेदन से वहाँ पर हथकरघा का अवलोकन किया। आदर्श कॉलोनी में जिनदर्शन के

उपरान्त आचार्यश्री के शुभाशीष वचन तथा आहार चर्या सम्पन्न हुई। और दोपहर में विहार हो गया। 14 तारीख को प्रात:काल सिहोरा में बाजे के साथ मंगल आगमन हुआ। आहार चर्या के उपरान्त दोपहर में बच्चों के संस्कार हेतु पाठशाला संचालन हेतु लोगों को प्रेरित किया। तथा शाम को बेरखेड़ी से होते हुए 15 जून को राहतगढ़ में मंगल वाद्यों के साथ प्रवेश हुआ। आचार्यश्री के मंगलप्रवचन के दौरान समाज के लोगों ने चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंटकर निवेदन किये। 6-7 दिन के प्रवास में प्रतिदिन आचार्यश्री के ससंघ द्वारा मंगलप्रवचन, दोपहर में स्वाध्याय, शंका समाधान और शाम को पाठशाला एवं प्रश्नमंच कर कार्यक्रम चला। तदुपरान्त 22 तारीख को दोपहर में राहतगढ़ से गुरुवर का विहार हो गया। मोरखेड़ी, बागरौद, ग्यारसपुर, अठारी, हिरनई, कुँआ खेड़ी होते हुए 26 जून को विदिशा (अरिहंत विहार) कॉलोनी में बाजे एवं जय-जयकारों के साथ आचार्य ससंघ की मंगल आगवानी हुई। श्रावक गण अपने-अपने द्वार पर गुरुवर के पादप्रक्षालन एवं आरती करके सातिशय पुण्य कमाया। वहाँ पर पहुँचकर विशाल श्री पार्श्वनाथ प्रभु के दर्शन करके विस्तृत प्रांगण में आचार्यश्री के मंगल अमृतवाणी सबको मिली। प्रवचन के दौरान सकल दिगम्बर जैन समाज के पंचायत अध्यक्ष एवं श्रावकगणों ने अरिहंत विहार में आचार्य गुरुवर के ससंघ चातुर्मास हेतु श्रीफल भेंटकर निवेदन किया। 3-4 दिन के प्रवास में मंगल प्रवचनादि से धर्म की प्रभावना हुई। 29 तारीख को सांची में जिनदर्शन व आहार चर्या सम्पन्न हुई। वहाँ से सलामतपुर, दीवानगंज, दयोदय गौशाला, सूखी सेवनियाँ, आदि होते हुए 3 जुलाई 2019 को भानपुर (भोपाल) में मंगलप्रवेश हुआ। दो दिन के प्रवास में लोगों ने प्रवचन आदि लाभ लिया तथा चातुर्मास हेतु निवेदन भी भावना व्यक्ति की।

पश्चात् 5 जुलाई को अयोध्या नगर भोपाल वालों की मंगल भावना से वहाँ आगमन हुआ। 7 जुलाई को आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज के दीक्षा दिवस एवं पाठशाला का कलश स्थापना का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। और 8 तारीख को भ.नेमिनाथ के मोक्षकल्याणक दिवस हर्षोल्लास पूर्वक निर्वाणलाडू चढ़ाकर मनाया गया और इसी दिन पूरी कमेटी के लोगों एवं सकल दिगम्बर जैन समाज ने 2019 का भव्य वर्षायोग अयोध्यानगर में हो इस भावना से श्रीफल भेंटकर नम्र निवेदन किया। 9 तारीख को आचार्यश्री ने ससंघ जिनमन्दिर दर्शनार्थ विहार किया। वहाँ से सोनागिरि में प्रवचन, पिपलानि में प्रवचन व आहर चर्या फिर समन्वय नगर (अवधपुरी) में मंदिर दर्शन, विद्यासागर संस्थान, साकेतनगर, पंचशील नगर व नेहरू नगर में मंदिर दर्शन, प्रवचन व आहार चर्या। नेहरू नगर में भी चातुर्मास हेतु अति नम्र निवेदन किया गया। परन्तु पहले से किये गये निवेदन पर 12 जुलाई को अशोकागार्डन में बाजे एवं जय-जयकारों के साथ गुरुवर की ससंघ भव्य मंगल आगवानी हुई। सब लोगों ने अपने-अपने गृह के सामने रंगोली डालकर गुरुवर के पादप्रक्षालन एवं आरती की और उनके मन प्रफुल्लित हुये। 13 जुलाई को पूरी अशोकागार्डन की समाज ने 108 नारियलों के साथ इस वर्ष का पावन वर्षायोग अशोकागार्डन को प्राप्त हो इस भावना के साथ श्रीफल अर्पित कर नम्र निवेदन किया और अयोध्यानगर वालों ने भी अशोकागार्डन आकर के हमारे यहाँ चातुर्मास हो ऐसी भावना से श्रीफलों द्वारा निवेदन किया। अब पुण्य की परीक्षा की घड़ियाँ चल रही हैं। देखते हैं किसको वह परम सौभाग्य मिलेगा? आचार्य गुरुवर ने सबको अपना-अपना पुण्य बढ़ाने हेतु आशीर्वाद दिया। यही है अतिथि साधुओं की चर्या धन्य है।

सम्यग्ज्ञान-भूषण तथा सिद्धांत-भूषण पदवी हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला पिता/पति श्री .... जिला ....से भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता प्राप्त है ☐ नहीं है ☐ सम्यग्ज्ञान-भूषण हेतु 400/- रुपये ☐ तथा सिद्धांत-भूषण हेतु 400/- रुपये ☐ प्रस्तुत है। मेरा पता :- ....जिला .... प्रदेश .... पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....फोन नम्बर/ मोबाईल ....ई-मेल .... है।

दिनांक : हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को सम्यग्ज्ञान-भूषण एवं सिद्धांत-भूषण हेतु पंजीकृत किया जाता है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

भाव विज्ञान पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन-पत्र

मैं .... मधु (शहद), मांस, मद्य (नशा) का त्यागी, धर्म का अनुसरण करने वाला

पिता/पति श्री ....निवासी...

से **भाव विज्ञान पत्रिका** शिरोमणी संरक्षक सदस्य रुपये 50,000/- से अधिक ☐ पुर्ण्याजक विशेषांक संरक्षक सदस्य रूपये 24500/- ☐ परम संरक्षक सदस्य रुपये 21000/- ☐ पुण्यार्जक संरक्षक सदस्य रुपये 18,000/-☐ सम्मानीय संरक्षक सदस्य रुपये 11,000/- ☐ संरक्षक सदस्य रुपये 5,100/- ☐ विशेष सदस्य रुपये 3,100/- ☐ आजीवन (स्थायी) सदस्यता रुपये 1,500/- ☐ राशि देकर आजीवन सदस्यता स्वीकार करता/ करती हूँ।

मेरा पता :- ....

जिला .... प्रदेश ....पिनकोड .... एस.टी.डी. कोड ....

फोन नम्बर/ मोबाईल .... ई-मेल .... है।

दिनांक हस्ताक्षर

कार्यालयीन उपयोग हेतु

श्री/श्रीमति .... पिता श्री .... को शिरोमणी संरक्षक/पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक/परम संरक्षक/पुण्यार्जक संरक्षक/सम्मानीय संरक्षक/संरक्षक/विशेष सदस्य/आजीवन सदस्यता क्रमांक ....प्रदान की जाती है।

दिनांक हस्ता. सम्पादक/प्रबन्ध सम्पादक

नोट:- ''भाव विज्ञान'' भोपाल के पक्ष में (ड्राफ्ट अथवा) स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, टी.टी. नगर, भोपाल में नेट/कोर बैंकिंग सुविधा के अंतर्गत सेविंग बैंक एकाउंट नंबर-63016576171 एवं IFS Code SBIN0030005 में नगद राशि सीधे जमा कर व रसीद प्राप्त कर प्रकाशक को रसीद की छायाप्रति प्रेषित कर सदस्यता शुल्क की रसीद प्राप्त की जा सकती है।

सदस्यता आवेदन पत्र भेजन का पता

''भाव विज्ञान'' एम-8/4, गीतांजली काम्पलैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 (म.प्र.) को प्रषित करें।

सम्पर्क : प्रधान सम्पादक-डॉ. अजित कुमार जैन - 7222963457, प्रबंध सम्पादक-डॉ. सुधीर जैन - 9425011357

भाव विज्ञान परिवार

❄❄❄❄❄ शिरोमणी संरक्षक ❄❄❄❄❄

मेसर्स आर.के. ग्रुप, मदनगंज-किशनगढ़, अजमेर, ● श्री जैन निर्मल कुमार झांझरी, डीमापुर (नागालैंड), ● श्रीमती जैन नीतिका हर्ष कोछल्ल, हैदराबाद, ● डॉ. जैन संकेत शैलेष मेहता, सूरत, ● श्री जैन श्रेणिक श्रेयस बीएल पचन्ना, बैंग्लोर, ● श्री प्रवीण जैन महावीर रोडलाइन्स, दमोह, ● श्रीमती रजनी महेन्द्र जैन, ● श्रीमती अनिता डॉ. (प्रो.)सुधीर जैन, ● श्रीमती नीलम राजेन्द्र जैन (एक्साइज़), भोपाल, ● श्री जैन अतुल, विपुल, कल्पेश रमेशचंद मेहता, अहमदाबाद● श्री जैन चंदूलाल राजकुमार काला, कोपरगांव।

❄❄❄❄ परम संरक्षक ❄❄❄❄

● श्री जैन गौतम काला, राँची ● श्री बुधराज जैन कासलीवाल, पांडीचेरी, ● श्री प्रेमचंद जैन कुबेर, भोपाल, ● **कटनीः** श्री पवन कुमार पंकज कुमार जैन।

❄❄❄ पुण्यार्जक विशेषांक संरक्षक ❄❄❄

● प्रबंधकारिणी समिति, श्री १००८ पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, कीर्तिनगर, जयपुर ● सकल दिगम्बर जैन समाज, दाँतारामगढ़, जिला सीकर ● श्री कुन्थीलाल रमेशचंद नरेश कुमार जैन गदिया, नसीराबाद (अजमेर) ● **रामगंजमण्डी :** सकल दिगम्बर जैन समाज एवं वर्षायोग समिति 2011, श्री जैन ताराचंद मित्तल परिवार एवं महेशकुमार अशोक कुमार महेन्द्र कुमार जैन ठोरा।

❄❄ पुण्यार्जक संरक्षक ❄❄

● श्री जैन नीरज सुपुत्र श्रीमती चन्द्रकला पाटनी, रांची ● सुशील कुमार, अभिषेक रोहित कुमार जैन, पांडीचेरी ● श्री मिट्ठनलाल जैन, नई दिल्ली।

❄ सम्मानीय संरक्षक ❄

● श्री वर्धमान विक्रमादित्य जैन, गोवा ● श्री जैन पदमराज होळल, दावणगेरे ● श्री जैन सोहनलाल कासलीवाल, सेलम ● श्री जैन संजय सोगानी, राँची ● श्री जैन आकाश टोंग्या, भोपाल ● श्री महावीरप्रसाद संजयकुमार जैन, इस्पात एंटरप्राईजेस प्रा.लि., कलकत्ता ● श्रीमती जैन संगीता हरीश बजाज, टीकमगढ़ ● श्रीमती कमलाबाई अशोक जैन साहबजाज, अजमेर ● श्री घनश्याम जैन, कृष्णा नगर, दिल्ली ● **जयपुर :** श्री जैन कमलजी काला, कु. इन्द्रसेना जैन ● **सूरत :** श्री नरेश जैन, (दिल्ली वाले), श्री जैन निलेशभाई शाह। ● **पथरिया (दमोह) :** श्रीमती जैन उषा पदम मलैया।

❄ संरक्षक ❄

● **रीवाः** श्री जैन विजय अजमेरा ● **छतरपुरः** श्री के. सी. जैन, डि. एक्साइज अधिकारी ● श्री अजित प्रसाद जैन सराफ, रेवाड़ी ● **दिल्ली :** श्री विजयपाल जैन, शाहदरा, श्री राकेश जैन, रोहिणी ● **हस्तिनापुर (मेरठ):** श्री दिगम्बर जैन तीर्थ बड़ा मंदिर ● **गुड़गांवः** श्री संजय जैन, ● **गाजियाबाद :** श्रीमती सुषमा रवीन्द्र कुमार जैन ● **कलकत्ताः** श्री जैन कल्याणमल झांझरी ● **भोपालः** श्रीमती सुधा महेन्द्र कुमार जैन, ● **कोटाः** श्री कस्तूरचंद सुरेश कुमार जैन, रामगंजमण्डी ● **गुवाहाटीः** श्रीमती जैन हीरामणी चांदमल सेठी ● **पांडीचेरी :** श्री जैन विमलचंद मोहित कुमार ठोलिया ● **सूरत :** श्रीमति विमला मनोहर जैन ● **जयपुर :** श्री एस.एल. जैन (बागड़िया), श्री जैन गुणसागर ठोलिया-किशनगढ़-रेनवाल, श्री जैन श्रेयांस कुमार पाटोदी, श्रीमती जैन अनिता पारस सौगानी, श्री जैन जितेन्द्र अजमेरा, श्री जैन ओम कासलीवाल, श्री जैन मंगलचंद हरकचंद मोतीलाल कमलचंद छाबड़ा, श्री विजय कुमार जैन छाबड़ा ● **उदयपुरः** श्री प्रकाशचंद जैन, श्रीमती निधी राहुल जैन-अनुपम ग्रुप ऑफ कम्पनीज, श्री जैन अशोक कुमार ड्वारा ● **इंदौर :** श्री सचिन जैन, स्मृति नगर ● **पथरिया (दमोह) :** श्री मुकेशकुमार जैन (संजय साईकिल)।

❄ विशेष सदस्य ❄

● **दमोह :** श्री मनोज जैन दाल मिल ● **अजमेर :** श्री भागचन्द जैन, नसीराबाद ● **सूरत :** श्री जैन हर्षद भाई मेहता, श्री जैन अरविंद भाई गांधी, श्री जैन संयम संदीप भाई शाह, श्री जैन रमेश मोहनलाल दौसी, श्री जैन कोठारी बाबूलाल कचरालाल, श्री जैन कन्हैयालाल कचरालाल मेहता, श्री जैन कमलेश शाह, श्री जैन हसमुख मगनलाल शाह, श्री जैन चम्पालाल लक्ष्मीलाल सिंघवी, श्री जैन नीलकेष बालू शाह मढ़ी, श्रीमती जैन सुनिता विद्या प्रकाश दीवान, श्री जैन अशोक कुमार गंगवाल खाच्छरियावास, श्रीमती जैन गुणमाला देवी दीपचंद सेठी ● **भोपालः** श्री राजकुमार जैन, बिजली नगर ● **कटनी :** श्री शुभमकुमार सुभाषचंद जैन, ● **पन्ना :** श्री महेन्द्र जैन, पवई।

❄ नवागत सदस्य ❄

● **सागरःवर्धमान कालोनी-** श्री संजय जैन पायल वाले, श्री अशोक पवनकुमार जैन जूनावाले, श्री मनोज जैन, श्री अरविंद जैन शास्त्री, श्री शैलेन्द्र शीतलचंद जेन मौआवाले, श्री धर्मचंद जैन गोपालगंज, श्री राजेन्द्रदेवेन्द्रकुमार जैन लक्ष्मीपुरा, श्री दिनेश जैन पायलवाले इतवारा, ● **भोपालः** श्री कैलाश कुमार जैन।

वर्द्धमान कॉलोनी, सागर में आ.श्री आर्जवसागरजी का पाद प्रक्षालन करते हुए महेश विलहरा, राजेन्द्र आदि।

वर्द्धमान कॉलोनी सागर में पाठशाला का कलश स्थापना करते हुए भक्तगण एवं अतिथि रवीन्द्र जैन, पथरिया।

आचार्यश्री के सान्निध्य में वर्द्धमान कॉलोनी, सागर में सम्यग्ज्ञान प्रशिक्षण शिविर में अपनी भागीदारी निभाती हुई महिलायें एवं कन्यायें।

सर्वोदय सम्यग्ज्ञान प्रशिक्षण शिविर वर्द्धमान कॉलोनी सागर में उत्साहित संकल्पित होते हुए विद्यार्थीगण।

वर्द्धमान कॉलोनी सागर में वेदी प्रतिष्ठा के पात्र चयन कार्यक्रम में सम्मेदशिखर विधान का भव्य आयोजन।

मंगलगिरि पर बनी धर्माकृतियों का अवलोकन करते हुए आचार्यश्री आर्जवसागरजी।

सागर, केन्द्रीय जेल में प्रवचन हेतु पहुँचे आचार्यश्री आर्जवसागरजी ससंघ।

केन्द्रीय जेल के हथकरघा में कैदियों के लिए उपदेश देते हुए आ.श्री आर्जवसागरजी।

रजि. क्रं. MPHIN/2007/27127

काकागंज, सागर दि. जैन मंदिर में नवीन वेदी प्रतिष्ठा कार्यक्रम के समय आ.श्री आर्जवसागरजी ससंघ।

वर्द्धमान कॉलोनी में प्रवचन देते हुए आचार्यश्री आर्जवसागरजी महाराज।

सागर में शीतल हथकरघा परिवार ने हथकरघा स्थल पर किया आचार्यश्री आर्जवसागरजी ससंघ की भव्य आगवानी।

विदिशा नगर में भव्य आगवानी के समय आ.श्री आर्जवसागरजी ससंघ के साथ चलते हुए भक्तगण।

भ.शीतलनाथ के चार कल्याणक क्षेत्र भद्दलपुर (उदयगिरि) पर ध्यान मग्न आ.श्री आर्जवसागरजी।

भद्दलपुर उदयगिरि की गुफा में ध्यान मग्न आर्यिका प्रतिभामति जी एवं आर्यिका सुयोगमति जी।

विदिशा के निकट उदयगिरि (भद्दलपुर) पहाड़ पर दर्शनार्थ पहुँचे आ.श्री आर्जवसागरजी ससंघ।

स्वामी एवं प्रकाशक : श्रीमती सुषमा जैन द्वारा मुद्रक : पवन कुमार जैन द्वारा पारस प्रिन्टर्स, 207/4, सांईबाबा काम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं एमआईजी-8/4, गीतांजली काम्पलेक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. अजित कुमार जैन, MIG-8/4, गीतांजली काम्प्लैक्स, कोटरा सुल्तानाबाद, भोपाल-462003 फोन : 7222963457, 9425601161